• वर्ष ६१ • अंक १६ • मूल्य ₹१५

।। ओ३म् ।।

• अगस्त (द्वितीय) २०१९

पाक्षिक

परोपकारी

जम्मू - कश्मीर से अनुच्छेद ३७० समाप्त

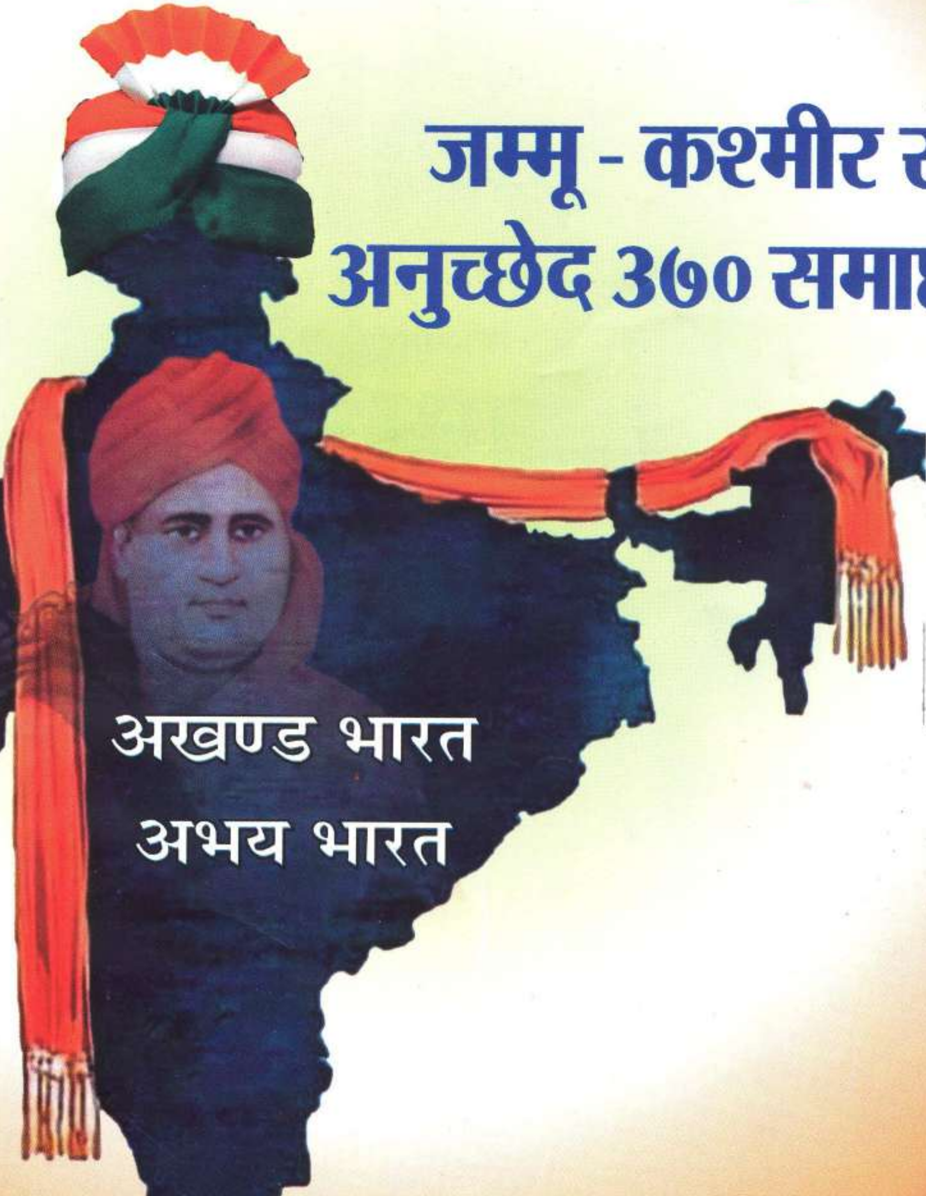

गुरुकुल ऋषि उद्यान में 'लोकभाषा प्रचार समिति' द्वारा आयोजित 'संस्कृत सम्भाषण शिविर' के समापन की झलकियाँ

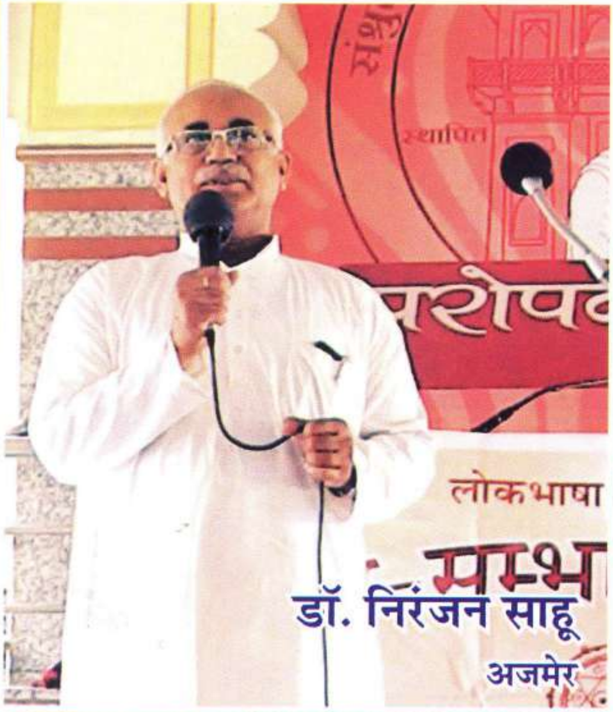

डॉ. निरंजन साहू
अजमेर

श्री सरोज कुमार दास
संस्कृत प्रचारक

श्रीमती ज्योत्स्ना 'धर्मवीर'
ऋषि उद्यान, अजमेर

आचार्य घनश्याम
ऋषि उद्यान, अजमेर

महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुख पत्र

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः॥

वर्ष : ६१ अंक : १६
दयानन्दाब्द: १९५
विक्रम संवत्: भाद्रपद कृष्ण २०७६
कलि संवत्: ५१२०
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,१२०

सम्पादक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार

प्रकाशक- परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-मन्त्री, परोपकारिणी सभा
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

परोपकारी का शुल्क
भारत में
एक वर्ष-३०० रु.
पाँच वर्ष-१२०० रु.
आजीवन -३००० रु.
एक प्रति - १५/- रु.
विदेश में
वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डॉलर
द्विवार्षिक-९५ पाउण्ड/१५२ डॉलर
त्रिवार्षिक-१४० पाउण्ड/२२५ डॉलर
आजीवन (१५वर्ष)-५००पा./८०० डॉ.
एक प्रति - ३ पाउण्ड
एक प्रति - ४ डॉलर

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

अगस्त द्वितीय २०१९

अनुक्रम

०१. मोदी सरकार का अभिनन्दनीय...	सम्पादकीय	०४
०२. मृत्यु सूक्त-३५	डॉ. धर्मवीर	०७
०३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	१०
०४. वेद ईश्वरीय ज्ञान है	पं. यशःपाल	१५
०५. शास्त्रों के नाम पर भटकती...	देवनारायण तिवारी	१९
०६. पुनर्जन्म से जीव की क्रमिक उन्नति	महात्मा चैतन्यमुनि	२३
०७. योग-साधना एवं स्वाध्याय शिविर		२७
०८. संस्था की ओर से...		२९
०९. १३६ वाँ ऋषि बलिदान समारोह		३२
१०. वेदगोष्ठी-२०१९		३३
११. आर्यजगत् के समाचार		३४

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com
उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं
www.paropkarinisabha.com→gallery→videos

'परोपकारी' पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं। इन्हें सम्पादकीय नीति नहीं समझा जाये।
किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

मोदी सरकार का अभिनन्दनीय ऐतिहासिक निर्णय

श्री नरेन्द्र मोदी सरकार ने ५ अगस्त २०१९ को जम्मू-कश्मीर प्रान्त से धारा ३७० हटाने का एक साहसिक, राष्ट्रवादी और ऐतिहासिक निर्णय लिया है। इस निर्णय से सरकार ने अपने घोषित कार्यक्रम को क्रियान्वित कर दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचय दिया है और यह सिद्ध कर दिया है कि देश सुरक्षित नेतृत्व के हाथों में है। सारा देश इस निर्णय से गद्गद है। इसके लिए श्री मोदी, गृहमन्त्री अमित शाह एवं उनकी सरकार बधाई की पात्र है। श्री नेहरू की अदूरदर्शितापूर्ण नीति को श्री मोदी ने दूरदर्शी बना दिया है।

विश्व में शायद ही कोई ऐसा देश होगा कि किसी स्वायत्त देश में कोई स्वायत्त प्रदेश हो और जो अपना पृथक् अस्तित्व रखते हुए अपने देश के ही विरुद्ध गतिविधियों में संलिप्त रहकर मनमानी करता हो। उसी देश का लगभग मुफ्त खाता हो और उसी की ओर गुर्राता हो। अस्थायी शासन-व्यवस्था के रूप में लागू की गई धारा ३७० सम्पूर्ण भारत की स्वायत्तता पर कलंक बन गई थी, शासन-तन्त्र की कायरता की प्रतीक हो गई थी, देश की अन्य जनता के साथ अन्याय का उदाहरण बन गई थी, विश्व में भारत के उपहास का दृष्टान्त बन गई थी, सरकार की विवशता की कहानी हो गई थी। सत्तर वर्षों से पला-बढ़ा उनका अहंकार विस्फोटों की शक्ल में लोगों पर विस्फोट, गोली और पत्थर बनकर बरसने लगा था। भ्रम इतना पाल बैठे थे जैसे अब उनका कोई कुछ बिगाड़ सकने वाला नहीं है और वे अब सारे देश का बिगाड़ेंगे।

पूरे देश में एक व्यक्ति पर यदि चार हजार का व्यय सरकार करती थी तो जम्मू-कश्मीर में वह प्रति व्यक्ति बढ़कर लगभग पन्द्रह हजार रुपये प्रति माह खर्च होता था। देश में कोई भोज्य पदार्थ २०-२५ रुपये प्रति किलो है तो सरकार तुष्टीकरण करने के लिए कश्मीरियों को दो रुपये प्रति किलो के भाव से बाँट रही थी, लगभग मुफ्त। इतनी सुख-सुविधाएँ देने के बावजूद कश्मीरी लोग भारत को गालियाँ देते हैं, सेना को गालियों के साथ पत्थर मारते हैं, 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' का नारा लगाते हुए उसका झण्डा फहराते हैं, भारतीय ध्वज का अपमान करते हैं। आतंकवाद, अलगाववाद को भड़काते हैं। आई.एस. आई.एस. जैसे बर्बर संगठन के कुख्यात ध्वज शासन को चिढ़ा-चिढ़ा कर फहराते हैं। बलात्कार, हत्याओं के द्वारा जनता में आतंक फैलाते हैं। सरकार द्वारा खान-पान, उदार व्यवहार करके जितना तुष्टीकरण किया जाता है उतना ही ये लोग भारत का विरोध एवं षड्यन्त्र करते हैं, उत्पात-मारपीट करते हैं। कश्मीर के शासन की शिथिलता का लाभ उठाकर पाकिस्तानी घुसपैठ करके आते हैं और बलात्कार तथा हत्याएँ करते हैं, आतंक फैलाते हैं। सेनाओं पर आक्रमण करते हैं। पुलिसजनों की उनके घर में घुसकर हत्याएँ करते हैं।

जम्मू-कश्मीर प्रान्त में मुसलमानों के अतिरिक्त जम्मू हिन्दू बहुल है और लद्दाख बौद्ध-हिन्दू बहुल, किन्तु मुसलमान इस प्रान्त को अपनी पैतृक सम्पत्ति मानकर उनके अधिकारों का हनन करते हैं और उन पर अवसर पाकर अत्याचार करते रहते हैं। अत्याचार की पराकाष्ठा १९८९ में तब हो गई जब एकाएक रात में मस्जिदों से घोषणा की गई कि सुबह तक सभी हिन्दू-सिख कश्मीर को छोड़कर चले जायें। जो नहीं जायेंगे उनका कत्ल कर दिया जायेगा। लगभग साढ़े पाँच लाख पंडितों-सिखों को जान बचाने के लिए रातों-रात अपना घर छोड़कर, कश्मीर छोड़ कर भागना पड़ा। जो नहीं भागे आंतकियों ने उनका सामूहिक कत्ल कर दिया। तत्कालीन सरकार चुपचाप तमाशा देखती रही। घर-सामान छोड़ कर आये हिन्दुओं को न किसी ने कानूनी संरक्षण दिया और न सन्तोषजनक जीवन सुविधाएँ। सारे देश में वे दर-दर, सड़क-सड़क भटकते रहे। ऐसा लगा जैसे सरकार के संरक्षण में दूसरा भारत-पाकिस्तान का विभाजन हुआ है। कथित सेक्युलरवादी भी दुम दबाकर अपने घरों में बैठे रहे, जो वर्ग-विशेष के लोगों को जरा-सा कुछ होने पर हाय-तौबा मचा देते हैं। राजनीति की निकृष्ट और पक्षपातपूर्ण मानसिकता का खुला तांडव कश्मीर में मचता रहा है।

प्यार और तुष्टीकरण से हालात संभलते न देख इस सरकार ने कठोर कदम उठाने का निर्णय लिया। अब स्थिति पहले से अधिक नियन्त्रण में है। भारत से छिटककर अलगाववाद के कगार पर पहुँचा एक प्रदेश भारत की मजबूत पकड़ में आ गया है।

जम्मू-कश्मीर पर धारा ३७० लागू करने से वहाँ के शासन-तन्त्र द्वारा शेष भारत से क्या-क्या अन्याय और पक्षपात होता रहा है, उसकी जानकारी हमें कश्मीर के इतिहास का सिंहावलोकन करने से मिलेगी। सन् १९४७ में भारत के आजाद होते समय जब सभी राज्यों का भारत में विलय हो रहा था तो जम्मू-कश्मीर के तत्कालीन राजा हरिसिंह ने अपने राज्य का विलय नहीं किया। राजा किसी आक्रमण से अपने राज्य की सुरक्षा करने में सक्षम नहीं था। अनुकूल परिस्थिति भाँपकर पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया और उसकी सेनाएँ आधे कश्मीर को हस्तगत कर चुकी थीं। तब राजा घबरा गया। उसने भारत के साथ विलय के पत्र पर हस्ताक्षर २७ अक्टूबर १९४७ को कर दिये। भारत के गृहमन्त्री सरदार पटेल ने सेनाएँ भेजी और काफी इलाका वापिस ले लिया। इसी बीच अपनी अदूरदर्शिता का परिचय देते हुए प्रधानमन्त्री नेहरू इस मुद्दे को संयुक्त राष्ट्रसंघ में ले गये। संयुक्त राष्ट्र संघ ने युद्ध को रोककर, जो क्षेत्र जिसके अधिकार में उस समय था, निर्णय होने तक वहाँ उसकी उपस्थिति को बनाये रखने को स्वीकार कर लिया। यह निर्णय भारत के लिये दुर्भाग्यपूर्ण था। पं. नेहरू की भूल से भारत को पहला नुकसान यह हुआ कि राजा हरिसिंह ने जो पूरा राज्य भारत को दिया था, उसका आधा हिस्सा पाक के अधिकार में रह गया और शेष बचा आधा भारत के अधिकार में। भारत के जम्मू-कश्मीर क्षेत्र को भारत का प्रदेश कहा जाता है और पाकिस्तान के कश्मीर को 'पाक अधिकृत कश्मीर' कहा जाता है। राज हरिसिंह ने क्योंकि सारा जम्मू-कश्मीर राज्य भारत को दिया था, अतः उस सम्पूर्ण क्षेत्र पर कानूनी और नैतिक दृष्टि से भारत का ही अधिकार है। पाक ने भारत के क्षेत्र पर अवैध कब्जा किया है।

पं. नेहरू ने दूसरी महान् भूल यह की कि शेख अब्दुल्ला से मिलकर जम्मू-कश्मीर में धारा ३७० की सुविधा दे दी और असंवैधानिक तरीके से ३५ ए धारा भी लागू कर दी। इन धाराओं के अन्तर्गत इस प्रान्त को असीमित पक्षपातपूर्ण अधिकार दे दिये गये और यह राज्य उन अधिकारों की आड़ में एक स्वतन्त्र देश बनने की तैयारियों की ओर बढ़ चला। दो-तीन परिवारों ने यहाँ शासन किया और वोटों के स्वार्थ में जनता को बहकाते-भड़काते रहे। आतंकवादियों तथा अलगाववादियों को हवा देते रहे और यह प्रदेश आतंकवादियों तथा अलगाववादियों का अड्डा बनता गया। उक्त-धाराओं के लगने से और हटने से प्रान्त की स्थिति में क्या परिवर्तन आया है, उसका विवरण पढ़कर भारत के राष्ट्रवादी जन अचम्भित हो जायेंगे-

१. जम्मू-कश्मीर को एक विशेष दर्जा दिया गया जिसमें उसके लिए शेष भारत से विशेष अधिकारों और सुविधाओं का प्रावधान था। अब वह समाप्त हो गया है और सभी प्रान्त एक संविधान के अन्तर्गत समान भाव से आ गये हैं। आश्चर्य की बात यह है कि उक्त धाराओं की व्यवस्था अस्थायी रूप में की गई थी, किन्तु सत्तर वर्ष से जड़ जमाकर वह स्वतः स्थायी बन गई थी। उसको हटाने की किसी की हिम्मत नहीं हुई जबकि उसकी आड़ में अन्याय-अत्याचार खुलकर निरन्तर होते रहे।

२. रक्षा, विदेशनीति, वित्त और संचार मामलों को छोड़कर वहाँ भारत का संविधान लागू नहीं होता था। उनका अपना स्वतन्त्र संविधान था। यहाँ तक कि अपराधों पर भी 'भारतीय अपराध कानून' लागू नहीं था। उनका अपना स्वतन्त्र, पृथक् कानून था। अब भारत का ही कानून वहाँ लागू होगा। आप कल्पना कर सकते हैं कि देश का कैसा मजाक बना रखा था।

३. भारत के किसी भी अन्य प्रदेश के नागरिक को वहाँ की नागरिकता का अधिकार नहीं था, अतः वह न वहाँ जमीन खरीद सकता था, न घर बना सकता था, न नौकरी कर सकता था, न व्यापार कर सकता था। मुगल बादशाहों से भी अन्यायपूर्ण व्यवस्था वहाँ बना रखी थी। अब वहाँ देश के अन्य भागों के समान सबको सारे अधिकार प्राप्त होंगे।

४. यह छूट दी गई थी कि कश्मीर में भारत से भिन्न वहाँ का अलग राष्ट्रप्रमुख (राष्ट्रपति) होगा जिसे 'सदर-

ए-रियासत' कहा जायेगा और वहाँ के मुख्यमन्त्री को '**प्रधानमन्त्री**' कहा जायेगा। वहाँ का भारतीय तिरंगा ध्वज नहीं होगा अपितु स्वतन्त्र, पृथक् ध्वज होगा। इसी कारण वे भारतीय ध्वज और अन्य राष्ट्रीय प्रतीकों का अपमान किया करते थे। फिर भी उनके विरुद्ध भारत में कोई कानूनी कार्यवाही नहीं हो पाती थी। अब उनको भारतीय कानून के अन्तर्गत रहना अनिवार्य है। भारत का राष्ट्रपति वहाँ का राष्ट्रपति होगा। प्रमुख मन्त्री का मुख्यमन्त्री नाम होगा। भारत का तिरंगा वहाँ का ध्वज होगा। एक ही देश में दो 'राष्ट्रपति', दो 'प्रधानमन्त्री' ऐसा विचित्र देश रहा है हमारा!!

५. जैसे किसी पराये देश में जाने के लिए 'वीजा' लेना पड़ता है, ठीक वैसे ही पहले किसी भी भारतवासी को कश्मीर में प्रवेश के लिए वहाँ की सरकार से अनुमति लेनी पड़ती थी। बिना अनुमति के प्रवेश करना दण्डनीय अपराध था। भारत की प्रथम सरकार में श्री नेहरू के मन्त्रिमण्डल में मन्त्री रहे श्री श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने मन्त्री पद से त्यागपत्र देकर, उक्त अन्यायों के विरुद्ध, बिना अनुमति के कश्मीर में प्रवेश किया था। शेख अब्दुल्ला सरकार ने उनको जेल में डाल दिया। कुछ दिन बाद रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गई। उनके और कुछ अन्य राष्ट्रभक्तों के बलिदान के बाद यह प्रतिबन्ध हट गया।

६. यदि कोई जम्मू-कश्मीर की लड़की प्रदेश से बाहर विवाह कर लेती थी तो उसके वहाँ की सम्पत्ति के अधिकार समाप्त हो जाते थे। अब भारत के नियमों के अनुसार उसके अधिकार सुरक्षित रहेंगे।

७. वहाँ अल्पसंख्यक वर्ग को आरक्षण नहीं मिलता था। अब मिलेगा।

८. जम्मू-कश्मीर के साढ़े सात लाख हिन्दुओं को लोकसभा में वोट देने का अधिकार तो है किन्तु वहाँ की विधानसभा और पंचायत में वोट देने का अधिकार नहीं दिया है, ताकि वहाँ के ठेकेदारों की कुर्सी बची रहे। उन्हें नागरिकता भी नहीं मिली है और उसके कारण नौकरी, व्यापार, मकान, जमीन नहीं है। क्या इतने घोर अन्याय की कल्पना पाठक कर सकते हैं? वह भी स्वतन्त्र कहे जाने वाले स्वायत्त भारत में! और यह घोर अन्याय सत्तर साल से चल रहा है। कोई कथित सेक्युलर कभी इतने अन्याय के विरुद्ध नहीं बोला? क्या इससे बड़ा उनका पाखण्ड हो सकता है?

वस्तुत: अब कश्मीर आजाद हुआ है और सही मायनों में भारत स्वायत्तशासी, स्वतन्त्र देश बना है। भारत सरकार द्वारा जम्मू-कश्मीर के पुनर्गठन के निर्णय से अब कश्मीर की स्थिति नियन्त्रित और सुदृढ़ बन जायेगी। अब 'टुकड़े-टुकड़े' गैंग आजादी नहीं मांगेगा, क्योंकि मोदी जी ने दे दी है!! अब-

-जम्मू-कश्मीर दो प्रान्तों में विभक्त हो गया है, लद्दाख और जम्मू-कश्मीर।

जम्मू-कश्मीर दिल्ली के समान केन्द्रशासित प्रदेश होगा जिसकी अपनी विधानसभा रहेगी। इसका कार्यकाल अब छह वर्ष के स्थान पर पाँच वर्ष का होगा।

-लद्दाख पृथक् केन्द्रशासित प्रदेश होगा। दोनों राष्ट्रपति के अधीन रहेंगे। मोदी सरकार का शतश: अभिनन्दन!!

डॉ. सुरेन्द्र कुमार

गोष्ठी का आयोजन

वैदिक वाङ्मय, आर्ष साहित्य, आर्यभाषा हिन्दी (अन्य भारतीय भाषाओं) के प्रचार-प्रसार व वैदिक समाज व्यवस्था स्थापित करने के लिए कटिबद्ध आर्य लेखक परिषद् द्वारा दिनांक ७ से ८ सितम्बर २०१९ दो दिवसीय गोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

कार्यक्रम परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान, अजमेर में होगा।

मृत्यु सूक्त-३५

प्रवचनकर्त्ता- डॉ. धर्मवीर

लेखिका - सुयशा आर्य

परोपकारिणी सभा के पूर्वप्रधान डॉ. धर्मवीर जी के वेद-विज्ञान के अन्तर्गत प्रसारित व्याख्यानों की जनोपयोगिता को ध्यान में रखकर 'परोपकारी' में प्रकाशित किया जा रहा है। व्याख्यानों के लेखन का कार्य उनकी ज्येष्ठ पुत्री सुयशा आर्य कर रही हैं। -सम्पादक

आरोहतायुर्जरसं वृणाना अनुपूर्वं यतमाना यतिष्ठ।
इह त्वष्टा सुजनिमा सजोषा दीर्घमायुः करति जीवसे वः।।

इस वेद-ज्ञान की चर्चा के प्रसंग में हम ऋग्वेद के १० वें मण्डल के १८ वें सूक्त को देख रहे हैं। मृत्यु सूक्त के नाम से इसके मन्त्र प्रसिद्ध हैं और इन मन्त्रों को पढ़ने से यह पता लगता है कि हमको कैसा आचरण करना चाहिए और उसका कैसा लाभ या परिणाम हमको प्राप्त होता है। मन्त्र का ऋषि यामायनः, देवता इसका त्वष्टा, छन्द है त्रिष्टुप। मन्त्र के शब्द हमने देखे थे,

आरोह तायुर्जरसं वृणाना

अर्थात् हम आगे बढ़ें, हमारी आयु यदि आगे जाएगी, लम्बी होगी तो हमको सहज स्वाभाविक रूप से वृद्धावस्था प्राप्त होगी। जितना अच्छा स्वास्थ्य होगा, उतनी हमारी आयु लम्बी हो सकेगी और सभी लोग अच्छी आयु पायेंगे तो **अनुपूर्वं यतमाना यतिष्ठ**, तो जितने भी लोग हैं वे आनुपूर्वी क्रम से आते रहेंगे। घर में सबको बड़ा होने का अवसर मिलेगा, सब बारी-बारी से बड़े बनेंगे। लोक में एक प्रसिद्ध बात है- किसी व्यक्ति ने किसी से पूछा, जी आप बड़े कैसे बन गए? तो उसने कहा, कुछ किया तो नहीं था, लेकिन बड़े मर गए और लोग हमको बड़ा कहने लग गए। तो हम बड़े बनें, इसके लिए हमारे क्रम में आनुपूर्वी क्रम होना चाहिए। वह ऐसा क्रम होना चाहिए कि जिस क्रम से लोग आए हैं, पैदा हुए हैं, संसार में उनकी स्थिति भी, उनका बड़प्पन भी, उनका गमन भी, आगमन के क्रम में होना चाहिए। इसलिए कहा-

अनुपूर्वं यतमाना यतिष्ठ।

इस मन्त्र का जो महत्त्वपूर्ण संकेत है या सन्देश है, वह है-

इह त्वष्टा सुजनिमा सजोषा दीर्घमायुः करति जीवसे वः।

जो व्यक्ति हमारी आयु को बढ़ाने वाला है, उसका नाम है त्वष्टा। हमने पीछे देखा था कि त्वष्टा क्योंकि रचनाकार है, तो वह अच्छी रचना को बनाता है, सुन्दर रचना को बनाता है। हमें बनाने वाले को भी वेद ने यहाँ त्वष्टा कहा है और वह त्वष्टा जब हमें बनाता है, हमें रखता और चलाता भी वही है। हमारे चलने और चलाने में अन्तर कहाँ आता है? ऐसा भी हो सकता था कि वह हमें बनाता है और वही हमें चलाता रहे। संसार के सारे पदार्थों को उसने बनाया है, वह चला रहा है, लेकिन सारे संसार के बने पदार्थों में भी जो चलने की, होने की प्रक्रिया है वह नियमित है, किसी नियम से हो रही है, कोई वस्तु तत्काल नष्ट हो रही है, कोई वस्तु धीरे-धीरे बन रही है, कोई वस्तु बहुत देर में समाप्त हो रही है, यह सब अकारण, अनायास, अव्यवस्था में नहीं हो रहा है, यह सब व्यवस्था में हो रहा है। व्यवस्था नियम बनाने वाले का चलता है, फिर हमारे यहाँ यह नियम क्यों नहीं चलता? इसलिए नहीं चलता क्योंकि यहाँ भी एक चेतन का स्थान है। यहाँ का, इस शरीर का स्वामी भी एक चेतन है। सारे संसार का स्वामी परमेश्वर है, वह हमारा भी स्वामी है, लेकिन हम भी किसी के स्वामी हैं।

हमारे अन्दर जो स्वामित्व है, वह दो तरह का स्वामित्व है। एक तो हमारा स्वामित्व है, एक हमारे से ऊपर परमेश्वर का स्वामित्व है। इसलिए केवल परमेश्वर के करने से ही हमारे शरीर में सब कुछ होता हो, ऐसा नहीं है। कुछ परमेश्वर ने किया है और कुछ हमारे करने के लिए छोड़ दिया है, उसे हमें करना होता है। परमेश्वर को जो करना

चाहिए उसमें कोई भी नहीं है, उसकी नियम-व्यवस्था कभी शिथिल नहीं होती है, गलत नहीं होती है। लेकिन हमारे साथ ऐसा नहीं है। हमारे साथ यह स्वाभाविक है क्योंकि हम सम्पूर्ण नहीं हैं, इसलिए हमारा कोई भी कार्य सम्पूर्ण नहीं होता, लेकिन परमेश्वर सम्पूर्ण है। इसलिए कोई भी कार्य उसका अधूरा नहीं होता क्योंकि जिसके जैसे गुण होते हैं उनका वैसा ही प्रभाव, वैसा ही निर्माण होता है। जब कोई संपूर्णता के साथ किसी काम को कर रहा है तो उसकी रचना भी सम्पूर्ण होगी और जब कोई मनुष्य अपूर्णता, अल्पबुद्धि, अल्पज्ञता के साथ कोई काम करता है, तो वह कितना भी प्रयत्न करे, उसके काम में अल्पज्ञता होगी, अधूरापन होगा।

एक रोचक तथ्य पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय जी ने अपनी एक पुस्तक में लिखा है। वह लिखते हैं लोग यह समझते हैं कि जैसे एक मनुष्य बुद्धिमान होता है, वह अपनी बुद्धि का उपयोग करके जैसा उसने पहले बनाया था, अगली वस्तु को उससे अच्छा बनाता है। इसे हम उसकी उन्नति कहते हैं, प्रगति कहते हैं, बुद्धिमत्ता कहते हैं, अच्छाई कहते हैं। लेकिन परमेश्वर के साथ यह बात बिल्कुल उल्टी है। वह जो भी नियम बनाता है, जैसा भी बनाता है, वह सदा वैसा ही बनाता है। हमें लगता है कि मनुष्य ज्यादा अच्छा है, क्योंकि हर बार वह कुछ सुधार करता है, हर बार कुछ नया बनाता है। लेकिन हम एक चीज भूल जाते हैं कि हमारे इस कम-अधिक होने में, नए-पुराने होने में जो कारण है, वह केवल इतना सा है कि या तो हम किसी चीज को जोड़ते हैं या कोई चीज़ हम भूल जाते हैं, या छोड़ देते हैं। इसलिये कोई वस्तु हमें पहले से नई लगती है, ज्यादा अच्छी लगती है, क्योंकि मनुष्य को यदि कुछ नया मिलता है, नया याद आता है, वह हर समय कुछ भूलता भी है, उससे कुछ छूट भी जाता है और उसकी रचना में कभी कुछ जुड़ भी जाता है। जब जुड़ जाता है तो हम उसे उन्नति कहते हैं, प्रगति कहते हैं और जब कुछ छूट जाता है तो वह कमी कहलाता है। हमारे साथ नियम क्या है कि यदि हम कहीं उन्नति या प्रगति करते हैं, अधिक करते हैं, कुछ जोड़ते हैं तो निश्चित रूप से कहीं हम भूलते भी हैं, कहीं कम भी करते हैं।

अब यहाँ विचारणीय बिन्दु यह है कि यदि परमेश्वर कहीं अधिक करेगा, तो अधिक बनेगा ही, तब जब वह कहीं कम करेगा। कम करेगा तो या तो भूलने से करेगा या आवश्यक नहीं होने से करेगा। यदि आवश्यक नहीं होने से करेगा तो फिर उसने पहले ही क्यों बनाया? और आवश्यक है तो अब क्यों नहीं बना रहा है? और भूलने से करेगा तो दोषी हो जाएगा, निर्बल हो जाएगा, अधूरा हो जाएगा। इसलिए हम दोनों के अस्तित्व में जो अन्तर है, वह सबसे बड़ा अन्तर इसी बात का है कि वह सम्पूर्ण है और हम अपूर्ण हैं, अधूरे हैं।

मनुष्य जब कोई चीज बनाता है तो वह पहले कारणों को इकट्ठा करता है। जैसे मकान बनाएगा, तो पूरा मकान एक साथ कैसे बनेगा? पहले वह भूमि खरीदता है, भूमि लेने के बाद वस्तुओं को इकट्ठा करता है। लोहा है, लकड़ी है, सीमेन्ट है, काँच है, पत्थर है, जो भी उसमें लगने वाला सामान है उनको बारी-बारी से इकट्ठा करता है और उसकी रचना भी एक क्रम से करता है, और एक समय में एक ही कार्य कर सकता है। वह दीवार बना रहा है, तो दीवार ही बनाता है, वह दीवार बनाने से पहले छत नहीं बना सकता। वह बारी-बारी से, क्रम से एक-एक चीज बनाता है और उसमें एक-एक चीज को जोड़ता है। कभी फर्श जोड़ता है, पत्थर लगाता है, कभी सीमेन्ट से दीवार को बराबर करता है, कभी उसमें दरवाजे लगाता है। अन्त में उसमें कहीं बिजली-पानी की व्यवस्था करता है। तो मनुष्य कोई काम करता है तो क्रमशः करता है, बारी-बारी करता है और तब जाकर वह कोई मकान, भवन पूरा करता है। लेकिन परमेश्वर ऐसा नहीं करता। परमेश्वर जिस भी वस्तु को बनाता है, या रचना करता है वह रचना पूरी करता है। रचना उसकी दोनों तरह की है- जड़ भी हैं, चेतन भी हैं। जो जड़ रचना है, उसके भी सारे अवयव एक साथ विकसित होते हैं, सब दिशाओं में घटना, बढ़ना एक साथ चलता है। और जब वह चेतन की रचना करता है, तब तो जीवन के पहले दिन से और मृत्यु क्षण तक वह समग्र में ही निर्माण और ह्रास करता है। ऐसा नहीं होता कि वो हाथ कहीं बनाकर लाता है, पैर कहीं से बनाकर लाता है, फिर गुड़िया की तरह से उसमें हाथ को

जोड़ देता है, फिर पैर को जोड़ देता है, फिर मस्तिष्क को जोड़ देता है, फिर तारों का जाल बिछा देता है, ऐसा नहीं करता। उसके यहाँ जब कोई प्राणी उत्पन्न होता है तो उसके हर अवयव, अंग एक साथ विकसित होते हैं और इसका प्रमाण है कि जब कोई बच्चा पैदा होता है तो उसकी कोई चीज अधूरी नहीं होती। आगे जब वह बढ़ता है, तो भी कुछ अधूरा नहीं बढ़ता कि पैर एक बार बढ़ेगा और सिर एक बार बढ़ेगा और पेट एक बार बढ़ेगा, ऐसा नहीं होता। वह सम्पूर्णता के साथ, एक साथ बढ़ता है समग्रता के साथ विकास होता है। गाय का बछड़ा पैदा होता है तो उसमें पैर भी, सिर भी, आँख भी, कान भी, नाक भी, सब एक साथ पैदा होंगे। इसलिए परमेश्वर का जो रचना का तरीका है और मनुष्य का जो तरीका है, अलग-अलग है। और इस अलग-अलग होने का मूल कारण है कि दोनों की सत्ता अलग-अलग है और इनकी अलग सत्ता होने से, अलग ज्ञान होने से इनका कर्म अपने आप अलग होता है। तो यह जो अलग हो रहा है, अलग इसलिए हो रहा है कि एक अधूरेपन से, अधूरे ज्ञान से काम कर रहा है और एक पूर्ण ज्ञान से काम कर रहा है। यह जो काम हो रहा है, इससे दो बातों का पता लगता है कि ये दो करने वाले अलग-अलग हैं, क्योंकि इनके करने का प्रकार अलग-अलग है। इनका प्रकार अलग-अलग है और एक ही स्थान पर दो तरह से हो रहा है तो इसका मतलब यह है कि दोनों की जो सत्ता है, अधिकार है, वह बिल्कुल भिन्न है, अलग है। इसलिए मनुष्य का शरीर भगवान् ने बना दिया है, उसके उपयुक्त साधन भी उसे दिए हैं, लेकिन इस शरीर का अधिकार उसने जीवात्मा को दिया है और इस जीवात्मा की इच्छा है कि वह चाहे तो इसे संभालकर लम्बा कर सकता है और वह न चाहे तो इसकी उपेक्षा भी कर सकता है। इसके लिए यहाँ दोनों परिस्थितियाँ हैं-परमेश्वर के द्वारा बनाई हुई भी और जीवात्मा को मिली हुई भी। जब इस तरह से हम देखते हैं तो हम पाते हैं कि परमेश्वर ने हमको अधिकार दिया है करने का। अधिकार दिया है तो अधिकार के दोनों पक्ष होते हैं-हम उसको उन्नत भी कर सकते हैं, हम उसको नीचे भी ले जा सकते हैं। हम उसका ह्रास या विनाश भी कर सकते हैं या उसको बढ़ाकर उन्नति तक पहुँचा सकते हैं।

मन्त्र में जो बात कही गयी है, वह यह कि तुम यदि प्रयत्न करोगे तो उसका लाभ तुमको अवश्य मिलेगा। परमेश्वर जो करेगा वह कम-अधिक नहीं करेगा, लेकिन जो मनुष्य के द्वारा होगा, वह कम-अधिक होगा। परमेश्वर तो यथावत् ही करेगा, कम-अधिक करना उसको आता ही नहीं है। वह बदल क्यों नहीं सकता या उसके काम को हम बदला हुआ क्यों नहीं देखते? उसका कारण यही है कि वह जब भी करता है, सम्पूर्णता के साथ करता है और जितनी बार करेगा, सम्पूर्णता के साथ करेगा। जैसे किसी नाप को, एक सेर, एक किलो को यदि हम तोलें और जितनी बार तोलेंगे तो वह एक किलो ही होगा क्योंकि एक सम्पूर्ण नाप के साथ हम उसे तोल रहे हैं। वैसे ही परमेश्वर जब किसी वस्तु को बनाता है, रचता है तो वह अपने सम्पूर्ण ज्ञान और सम्पूर्ण क्रिया से करता है, इसलिए उसकी रचना में कभी भी त्रुटि नहीं होती। हाँ हमको लगता है कि हर बार एक ही तरह से बनाने का क्या फायदा? लेकिन जो सर्वोत्तम होगा, जो सर्वमान्य होगा, सर्वांश में एक जैसा होगा, वह तो हर बार एक जैसा ही होगा। इसलिए परमेश्वर की जो रचनायें हैं उनका सौन्दर्य सदा एक जैसा होता है।

इस मन्त्र में कहा गया है कि यदि मनुष्य अपने प्रयत्न करे, तो परमेश्वर उसकी सहायता करता है।

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. १५ से २२ सितम्बर, २०१९- **योग-साधना शिविर**

२. ०१, ०२, ०३ नवम्बर २०१९- **ऋषि मेला**

ऋषि उद्यान में होने वाले कार्यक्रमों के लिए

सम्पर्क सूत्र- ०९४६०४२११८३, ०१४५-२४६०१६४, ०१४५-२६२१२७०

कुछ तड़प-कुछ झड़प

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

यह ईश्वर की देन तथा पूजनीय पूर्वजों के आशीर्वाद का फल है कि देश-विदेश से प्रतिदिन 'कुछ तड़प कुछ झड़प' स्तम्भ विषयक प्रबुद्ध पाठकों की प्रतिक्रियायें तथा आने वाले अंकों में छपने वाली मणि के लिये अत्यन्त ठोस उपयोगी सुझाव तथा विचार चलभाष पर प्राप्त होते रहते हैं।

क्या किया? क्या दिया?- इस 'तड़प झड़प' स्तम्भ ने आर्यसमाज को क्या-क्या दिया है? यह विस्तार से कभी बताया जायेगा। हरियाणा के एक गणित अध्यापक इसे ध्यान से पढ़ते व अपने विशेष योग्य शिष्यों को पढ़ने की प्रेरणा देते रहते हैं। आर्यसमाज को एक उज्ज्वल रत्न, सूझबूझ वाला साहसी मिशनरी, परोपकारी के इसी स्तम्भ से मिला है। गुरप्रीत की लेखनी चमत्कारी है, शास्त्रार्थ की कला में भी वह अद्वितीय है। इसने समाज को दानी दिये हैं। समर्पित मिशनरी देवियाँ दी हैं और बहुत कुछ मिल रहा है।

ऐसे दूरगामी परिणाम वाले सुझाव- गत दिनों यह सुझाव मिला कि महात्मा गाँधी के आर्यसमाज पर भीषण प्रहार के प्रतिकार में आपने पं. चमूपति जी का शानदार उत्तर अंग्रेजी व उर्दू में छपवाया था। तब आपने उस समय महाशय चिरञ्जीलाल जी प्रेम तथा विश्वप्रसिद्ध कहानीकार सुदर्शन जी लिखित ऐसी पुस्तकों की भी चर्चा की थी। वे दोनों भी यथाशीघ्र हिन्दी में छपवा दीजिये। ये दोनों पुस्तकें स्वर्गीय पं. फूलचन्द शर्मा 'निडर' के परिवार की ओर से कई अन्य उर्दू पुस्तकों सहित कल फिर प्राप्त हुई हैं। निडर जी के भण्डार से मिली प्रतियाँ उनके प्रथम संस्करण हैं।

एक के प्रकाशक महाशय राजपाल तो दूसरी के लाला लाजपतराय जी। दोनों में अद्भुत, मौलिक, ठोस और बेजोड़ सामग्री है। एक का प्राक्कथन लाला जी ने तो दूसरी का शहीद धर्मवीर राजपाल जी ने लिखा है। इनका अनुवाद आज ही आरम्भ कर दिया जावेगा। प्रकाशन की व्यवस्था दो सप्ताह तक हो जावेगी। लाला लाजपतराय की कोटि के नेता तथा हुतात्मा राजपाल का क्या मत था और वे क्या चाहते थे? यह जानकर आर्यजन झूम उठेंगे। इनके हिन्दी संस्करण का प्रकाशन आर्यसमाज के इतिहास की गौरवपूर्ण घटना होगी। वेद का उपहास उड़ाने तथा वेद की निन्दा के लिये मुसलमानों ने असंख्य पुस्तकें रचीं। मैक्समूलर जैसे पादरियों की कृपा से वेद की निन्दा में लिखे गये छोटे-बड़े ग्रन्थों की तो बाढ़ ही आ गई। भागवत आदि पुराणों की पोल खोलते हुये पादरी लोग निशाना वेद पर ही साधा करते थे। पं. लेखराम-वंश की कृपा से २०-२५ वर्ष में ही युग पलट गया।

ईसा तथा मुहम्मद को महिमा-मण्डित करने के लिये, मूर्तिपूजक बहुदेवतावादी पौराणिक हिन्दुओं को धर्मच्युत करने के लिये वेद में से मुहम्मद को, मुल्ला को खोजने लगे। वेद में उन्हें 'मदीना' दिखाई देने लगा। एक पेटपन्थी हिन्दू भी हिन्दुओं का शिकार करने में उनका सहायक बना। सनातन धर्म के नेता भक्त रामशरणदास जी ने लिखा है कि दिल्ली में श्रीकृष्ण का अवतार बनकर एक मौलवी ने हिन्दुओं को बहुत मूर्ख बनाया। तिलकधारियों की तो बोलती बन्द हो गई। तब पता नहीं 'हिन्दुत्व' की दुहाई देने वाले बाबे कहाँ चले गये?

भक्त रामशरण जी ने लिखा है तब एक आर्यसमाजी विद्वान् ने हुंकार भरकर उसे ललकारा।

'किस शेर का आना था कि रण काँप रहा था'

पता ही न चला कि पाखण्डी मुल्ला कहाँ जा छिपा। भक्त रामशरण जी ने उसका नाम तो नहीं लिखा, परन्तु वह विद्वान् आर्य-गौरव पं. रामचन्द्र जी देहलवी थे। भक्त जी पण्डित जी के पाण्डित्य के बहुत प्रशंसक थे। माधवाचार्य ने एक पुस्तक में पण्डित जी को 'मुंशीजी' लिखा था। यह उसका जन्म-अभिमान था। इस घटिया वार का मुँह तोड़ उत्तर तब हमने दिया था।

आज इसी प्रसंग में स्वर्णिम इतिहास का एक अत्यन्त प्रेरणाप्रद अध्याय पाठकों की सेवा में हम सप्रमाण रखते हैं। लाहौर से प्रकाशित होने वाले आर्य मासिक 'मिलाप' के अगस्त सन् १९१७ में पृष्ठ ३१-३४ तक कुछ ऐसा इतिहास दिया गया था जिसे हम भूल गये। स्मरण रहे यह 'मिलाप' महात्मा आनन्द स्वामी जी का दैनिक मिलाप

नहीं था। इस मासिक मिलाप के सम्पादक श्री रामलाल दिल्ली गये तो उन्हें एक स्वाध्यायशील आर्य ने बताया कि एक पादरी ने उस आर्य से कहा कि तुम्हारे वेदों में हजरत ईसा के बलिदान (सूली पर लटकाये जाने) का उल्लेख है। उस पादरी ने इसे ईसा विषयक भविष्यवाणी बताया।

उस स्वाध्यायशील आर्य ने पादरी को वह मन्त्र सुनाने की चुनौती दे दी। पादरी ने झट से यजुर्वेद का प्रसिद्ध मन्त्र "य आत्मदा बलदा यस्य...।" सुना दिया। उस आर्य ने भी तत्काल पादरी को मन्त्र के एक-एक शब्द का अर्थ सुना दिया। इसमें न तो ईसा है, न छलिये हवारी (चेले) मण्डल तथा न ही सूली की कोई चर्चा है। पादरी फिर भी यही रट लगाता रहा, "खुदा ने अपने आपको दे दिया- दूसरे शब्दों में अपने पुत्र को दे दिया।"

खींचतान करके वेद मन्त्र में ईसा खोज निकालने का दुस्साहस सबसे पहले पादरी ल्कारक ने अपनी पुस्तक 'वैदिक यज्ञ' में किया था। आगे चलकर पादरी लोगों के हाथ यजुर्वेद के ४० वें अध्याय का मन्त्र 'ईशा वास्यं' लग गया बस फिर क्या था 'ईशा' को ईसा बनाना क्या कठिन था, परन्तु तब दिल्ली के उस आर्य के सामने वह पादरी टिक न सका। पीठ दिखाकर खिसक गया।

आर्य पुरुषो! राधास्वामी मत के तीसरे गुरु श्री हजूर जी महाराज ने भी लिखा है कि हिन्दुओं ने पहली बार चाँदापुर शास्त्रार्थ के समय मौलवियों तथा पादरियों को ऋषि दयानन्द से पिटकर पीठ दिखाकर भागते हुये देखा। अब तो केरल में बाइबिल का नाम 'सत्य वेद पुस्तक बाइबिल' है। यह है तो छल परन्तु वेद-निन्दक पादरी अब वेद नाम देकर बाइबिल को महिमामण्डित कर रहे हैं। स्वामी विवेकानन्द के नामलेवा मूर्तिपूजक तो ऋषि का नाम लेते हुये कतराते घबराते हैं। आपने क्यों धर्म-रक्षा की थी, अपने शास्त्रार्थों व बलिदानों की चर्चा क्यों छोड़ दी?

जब धर्मवीर जी ने चुनौती स्वीकार की- परोपकारी से जुड़ा इतिहास का गौरवपूर्ण पृष्ठ याद आ गया। संक्षेप से वह भी दोहरा दें। मुसलमानों ने एक पौराणिक की सेवा लेकर वेद से ऊँटों की, मुहम्मद की तथा पैग़म्बर की माता की भविष्यवाणियाँ खोज लीं। कुछ आर्यों ने मुझे उत्तर देने की प्रेरणा दी। मैंने कहा, आप धर्मवीर जी से बात करें। वह कहेंगे तो 'परोपकारी' में उत्तर-प्रत्युत्तर ऐसा दूँगा कि विरोधी दुबक कर बैठ जायेंगे।

परोपकारी में छपा मेरा लेख धर्मवीर जी ने सम्पादक 'कान्ति' आदि कई मुसलमानों को भेज दिया। आज पर्यन्त उसका प्रतिवाद तो कोई कर ही नहीं सका। मेरे तर्कों व प्रमाणों का सार कुछ ऐसे था-

१. कुरान में ११४ सूरतें हैं। लगभग सब सूरतों को अल्लाह मियाँ ने ऋषि दयानन्द जी का नाम नामी लेकर आरम्भ किया है। 'रहमान', 'उल रहीम' शब्दों के सर्वविदित अर्थ दयालु दयानन्द (दयावान) हैं। कुरान के सब भाष्यकार इन शब्दों के यही अर्थ करते हैं। दयानन्द कहते डर लगता है सो दयावान, दयालु, कृपालु तो सबको मान्य है ही।

२. कुरान में सूरते नूर (प्रकाश) में ६४ आयतें हैं। मित्रो! यह तो स्पष्ट रूप से सत्यार्थप्रकाश, सत्यानन्द स्वामी, वीर वेदप्रकाश, धर्मप्रकाश, स्वामी सत्यप्रकाश, विश्वप्रकाश तथा पं. शान्तिप्रकाश की भविष्यवाणियाँ हैं। सत्य को स्वीकारना पड़ेगा।

३. सूरते कमर (चन्द्र) में ५५ आयतें हैं। इन्हें पं. रामचन्द्र देहलवी, पं. त्रिलोकचन्द्र शास्त्री, प्रो. उत्तचन्द्र 'शरर' की शान में मान लीजिये। हठ करने से क्या लाभ?

४. देखिये अल्लाह मियाँ को ऋषि दयानन्द से अपार प्यार है सो सूरते रहमान में ७६ आयतें ताज़िल करके ऋषि दयानन्द के नाम का डंका बजाया है। पूर्वाग्रह, संकीर्णता तजकर सच्चाई को स्वीकार करो, इसी में मनुष्य समाज का गौरव है।

५. अल्लाह मियाँ को एकेश्वरवाद में अटल विश्वास रखने वाले आर्यों से विशेष लगाव है। कुरान के अन्तिम भाग में सूरते 'शम्स' (सूर्य) की १५ विशेष आयतें नाज़िल करके वेद-विदुषी आचार्या सूर्यादेवी के आगमन की शुभ सूचना देकर स्त्री जाति का सिर ऊँचा कर दिया है।

६. मुसलमान मित्र जानते ही हैं कि पं. लेखराम अल्लाह तथा उसकी वेदवाणी पर सर्वस्व वार देने वाला शहीद शिरोमणि और गौरवगिरि था। सूरते कलम (लेखनी) की ५२ आयतें, लेखनी वाले लौह लेखक पं. लेखराम की शान में उतार कर मानव समाज पर भारी उपकार किया

है। जो कुछ हमने निवेदन किया है यह सब कुछ अल्लाह ने ही हमारे दिल में डाला था। धर्मवीर जी इसे पढ़-सुनकर झूम उठे थे।

मौलवियों पादरियों की धोखाधड़ी आर्यों ने रोकी- एक समय था कि बड़े-बड़े पादरी व मौलाना आर्य विद्वानों के मत-पन्थों के अथाह ज्ञान का लोहा मानते थे। चाँदापुर के शास्त्रार्थ में ही पादरी ने मौलवियों से खुलकर कहा था कि **ऋषि दयानन्द इस प्रश्न का उत्तर हजार प्रकार से दे सकते हैं। हम और तुम हजारों मिलकर भी इनसे बात करें तो भी पण्डित जी (ऋषि जी) बराबर उत्तर दे सकते हैं।** आर्यसमाज के इतिहास में ऐसी और भी अनेक घटनायें घटीं जिनकी चर्चा हमारे वक्ता व लेखक अब करते ही नहीं। आर्य जनता में उत्साह भरने, प्रेरणा देने के लिये ऐसे इतिहास को बिसार देना आत्मघाती भूल है।

बद्दोमली (पश्चिमी पंजाब) में इस्लाम के अनुभवी विद्वान् मौलाना सनाउल्ला से ठाकुर अमरसिंह जी का यौवनकाल में एक शास्त्रार्थ हुआ था। तब कुरान के भाष्यकार मौलाना सनाउल्ला जी ने कहा था, **"मैं जब आर्यसमाज की वेदी से बोलता हूँ तो मुझे ऐसे अनुभव होता है कि मैं एक विश्वविद्यालय में बोल रहा हूँ।"**

आज भी आर्यसमाज में अपने सिद्धान्तों का गम्भीर ज्ञान रखने वाले कुछ विद्वान् हैं, परन्तु उंगलियों पर गिने जा सकते हैं। गिनती में तो अनेक आचार्य हैं।

हज़रत मुहम्मद से पूर्व के काल को मुसलमान 'जमानाये जाहिलियत' अविद्या अन्धकार का युग बताया करते हैं। अपनी ही इस सोच का खण्डन करते हुये इसके विपरीत वे हिन्दुओं को बहकाने व भ्रमित करने के लिये कभी तो वेद में 'कादी' शब्द निकाल कर इसे घसीट कर कादियाँ सिद्ध करके फिर कादियाँ में एक पैगम्बर गुलाम अहमद की वेद में से खोज करते हैं। मियाँ को अहमद से मिलता-जुलता एक शब्द मिल गया तो झट से 'वेद में अहमद और कादी' पुस्तक छप गई। हमने देखी व पढ़ी। हिन्दू-हिन्दू की रट लगाने वाला एक भी कोई महापण्डित, ब्राह्मण, शंकाराचार्य, काशी, मथुरा, प्रयाग, अयोध्या, द्वारका, जगन्नाथपुरी, बर्फानी बाबा तक मैदान में इस घातक आक्रमण का उत्तर देने नहीं निकला।

वैसे इसी को लेकर आर्यों ने उनकी बोलती बन्द करके हिन्दुओं की रक्षा की। कल तक तो मिर्ज़ाई मिर्ज़ा का यह पद्य बोलकर शोर मचाते थे-

नास्तिक मत के वेद हैं हामी
है यही मुद्दआ (प्रयोजन) वेदों का

अब उसी वेद से वह अपने नबी आदि को खोजते फिरते हैं। पैगम्बर से पूर्व जब वेद ज्ञान की खान आपने मान लिये तो 'वैदिक युग अन्धकार युग' आपका कथन मिथ्या सिद्ध हो गया। यहाँ यह भी बता दें कि हमारे पूज्य पं. त्रिलोकचन्द्र जी ने कादियाँ की मस्जिदे अकसा में इसी विषय पर शास्त्रार्थ करके पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहरा दी थी।

श्री सोमेश जी का लेख- परोपकारी के जुलाई द्वितीय के अंक में सोमेश जी पाठक का मास्टर आत्माराम जी पर एक लेख छपा, पढ़ा। वह बिना खोज पड़ताल के कुछ लिखते नहीं। इस लेख में उनकी जानकारी का स्रोत कोई प्रामाणिक विद्वान् नहीं। मुंशी कन्हैयालाल को पढ़कर श्री मास्टर जी आर्यसमाजी बन गये, इस गप्प को गढ़ने वाला बधाई का पात्र है। मुंशी जी सुधारक, जाति प्रेमी, ऋषि के परम प्रशंसक थे, परन्तु वह आर्यसमाजी नहीं नास्तिक थे। मास्टर जी के पिता जी और मास्टर जी पर कन्हैयालाल जी की लेखनी का बहुत प्रभाव था। यह तो सत्य कथन है।

हमारा प्रिय सोमेश प्रमाणों की तथ्यों की खोज में सदा श्रम करता रहता है। हम बताना चाहते हैं कि मास्टर जी जीवनभर आर्यसमाजी बनाने वाले अपने गुरु मास्टर मुरलीधर ऋषिभक्त का गुणगान करते रहे। उनकी कृपा से ही पं. लेखराम जी के दर्शन करने तथा विचार सुनने का सौभाग्य प्राप्त हो सका। हमने मास्टर मुरलीधर पर परोपकारी में तथा अपने कई ग्रन्थों में बहुत कुछ लिखा है।

माननीय विरजानन्द ने प्यारे सोमेश जी का लेख पढ़कर चलभाष पर एक प्रश्न पूछ लिया। उन्हें बता दिया कि मुद्रण दोष से (proof mistake) इस लेख में उनके निधन का सन् १९६८ एक नहीं दो बार छप गया है। सोमेश जी ने सन् १९३८ लिखा। ३८ का ६८ तो बनना सहज ही है। जिस धुन से श्रद्धा से सोमेश श्रम करते हैं उनका श्रम फलीभूत होगा। मास्टर जी पर शीघ्र हमारा ग्रन्थ आने ही

वाला है।

एक भूल-सुधार कर लें- हमने जो अगली 'तड़प झड़प' भेजी तो दीवान बद्रीदास जी के साथ सिख बन्धुओं का पक्ष रखने वाले न्यायाधीश गुरनामसिंह का नाम मस्तिष्क में घूमता तो रहा, परन्तु ठीक-ठीक याद नहीं आ रहा था। हमने तभी कोष्ठक में अपनी शङ्का दे दी। शीघ्र याद आ गया कि उनका नाम श्री गुरनाम सिंह जी था। वह पंजाब के मुख्यमन्त्री भी रहे। हमें अपनी चूक पर खेद है।

ऋषि का गहरा प्रभाव- दूरदर्शन में, पत्रों में बाढ़ के प्रकोप के समाचारों में बताया गया कि "भगवान् भी डूब गये।" कभी बद्रीनाथ में डूबे थे। ऋषि का घोष, उसकी सीख रंग ला रही है। भले ही राजनेता सत्ताधारी अन्धविश्वासों का, पौराणिकता का तथा जड़पूजा आदि का पोषण संरक्षण कर रहे हैं, परन्तु हिन्दू के दिल के किसी कोने में ऋषि की सीख और सत्य गुदगुदाकर बोल पड़ते हैं कि मनुष्य के गढ़े हुये पत्थर के, धातु के भगवान् हमारी तो क्या अपनी भी रक्षा नहीं कर सकते। इनको इसी कारण भक्त भी डुबोते रहते (विसर्जन) हैं। बाढ़ आदि में भी डूबते हैं।

सबसे बड़ा धनवान कौन सा भगवान्?- इस समय देश में श्रीराम, श्रीकृष्ण आदि सब महापुरुषों का मतान्ध भक्तों के कारण अवमूल्यन हो चुका है। यह एक कटु सत्य है। श्रीकृष्ण गीता में स्वयं को वेदों में सामवेद बताते हैं। योगी का प्रिय विषय उपासना होने से श्रीकृष्ण जी सामवेद पर मुग्ध हैं। सामवेद का कृष्ण भक्तों को अता-पता ही नहीं। रामजी व माता सीता वनों में भी वेद-ऋचाओं से यज्ञ रचाते थे। अब राम भक्तों का वेद से कुछ लेना-देना नहीं। जय श्रीराम, हनुमान चालीसा व ऊँची से ऊँची प्रतिमा से श्रीराम क्या बड़े और पूज्य बनेंगे? टी.वी. ने बता दिया कि महाराष्ट्र के साईं बाबा इस घड़ी हिन्दुओं के चोटी के अवतार, सबसे लोकप्रिय उपास्य तथा सबसे धनवान् भगवान् हैं। साईं बाबा के चढ़ावे का लेखा-जोखा बैंकों की मशीनें करती हैं। अयोध्या में श्रीराम की जो स्थिति है सो हम देख चुके हैं। साईं बाबा ही कामनायें पूरी करने वालों में शीर्षस्थ भगवान् हैं। काँवड़ियों, बर्फानी बाबावालों के रक्षक तो सेना के जवान, अर्धसैनिक बल तथा पुलिस के जवान हैं। इनके भगवानों की जो स्थिति है वह इसी से समझ लो।

गुजराती में जीवनी साहित्य- श्रद्धेय मास्टर आत्माराम जी आर्यसमाज के एक मूर्धन्य साहित्यकार, शास्त्रार्थ-महारथी और जीवनी लेखक भी थे। देश के एक मूर्धन्य सुधारक-विचारक भी थे। उठती जवानी में बड़ौदा गुजरात की पुकार सुनकर सगे-सम्बन्धियों को तजकर बड़ौदा चल दिये। उनकी समाज-सेवा तथा दलितोद्धार के लिये वहाँ पग-पग पर उनको अपमान का विषपान करना पड़ा। आज हमारे प्रधानमन्त्री भी बड़ौदा की, गुजरात की स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में गौरवपूर्ण चर्चा करते हैं, परन्तु शिक्षा-प्रचार तथा सुधार की पताका फहराने वाले बलिदानी आत्माराम जी का नाम कभी प्रधानमन्त्री जी के मुख से किसी ने नहीं सुना।

ऐसे अद्वितीय सुधारक विचारक की किसी ने गुजराती में एक सौ पृष्ठ की जीवनी भी न लिखी। उनकी तो आप छोड़िये गुजराती में तो किसी ने महर्षि दयानन्द का भी दो सौ-तीन सौ पृष्ठ का जीवन-चरित्र न लिखा। श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा, गुजरात के आर्य हुतात्माओं, श्रीमान् ज्ञानेन्द्र जी सिद्धान्तभूषण आदि पर गुजराती में एक भी पठनीय ग्रन्थ न छप सका। आज गुजरात में कौन जानता है कि अनाथ बालक ज्ञानेन्द्र ने धर्म-रक्षा, जाति-रक्षा के लिये विदेशों में शिक्षा-प्राप्ति का प्रलोभन ठुकरा दिया। हमारे मन में गुजरात है, परन्तु गुजरात से बहुत दूर बैठे हैं। मास्टर आत्माराम जी पर ठोस documented प्रामाणिक, खोजपूर्ण ग्रन्थ हमारे प्रारब्ध में था। यह हमें सन्तोष है। कर्नाटक आर्यसमाज के हमारे इतिहास पर पहली प्रतिक्रिया यह आई थी कि देखो! एक पंजाबी ने, उत्तर भारतीय ने कैसा खोजपूर्ण कर्नाटक आर्यसमाज का इतिहास लिख डाला है। हम तो मास्टर आत्माराम के अद्भुत शास्त्रार्थों पर ही तीन सौ पृष्ठों का एक ग्रन्थ दे देते, परन्तु जीवन की साँझ है। यह साहित्यिक कुली अनेक कार्यों से लदा रहता है। गुजरात धनसम्पन्न (commercial सोच) वाला प्रदेश है, परन्तु ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के साथ खूब अन्याय किया गया है। हम गुजरात के गीत गाते नहीं थकते।

कुछ विचारणीय शिक्षाप्रद गम्भीर कथन- राजनीतिक नेताओं के भाषण तथा वक्तव्य तो चलते ही रहते हैं, परन्तु यदा-

कदा उनके कुछ कथन गम्भीर अर्थ रखते हैं यथा प्रधानमन्त्री जी का चर्चित नारा ''सबका साथ-सबका विकास और सबका विश्वास''। इस देश में, गली-गली में 'जगत् मिथ्या' और केवल 'ब्रह्म सत्य' की लोरी दी जाती रही। महर्षि दयानन्द ने ईश्वर, जीवों तथा प्रकृति को नित्य, अनादि माना व कहा। सृष्टि व जगत् को भी प्रवाह से अनादि व सत्य माना। जगत् मिथ्या है, स्वप्न है इसका खण्डन किया। मोदी जी का यह वाक्य प्रकार अन्तर से जगत् मिथ्यावाद की धज्जियाँ उड़ाने वाला विचार और जगत् सत्य है, जीव असंख्य हैं केवल ब्रह्म ही नहीं अन्यथा 'सबका' का विकास कुछ भी अर्थ नहीं निकलता। अच्छा हुआ जीव ब्रह्म का अंश है इस अन्धविश्वास की भी पोल खुल गई।

संघ का इतिहास- नागपुर विश्वविद्यालय संघ का इतिहास भी पढ़ाया करेगा। इतिहास में घटित घटनाओं का समावेश कोई नई बात नहीं। उनकी सरकार है। सत्ता का इतना लाभ उठाने में क्या आपत्ति है, परन्तु देश में बढ़ रहे जटिल जातिवाद का उन्मूलन समरसता वाला इतिहास पढ़ाने से ही सम्भव है। जिन्होंने अस्पृश्यता, जातिवाद उन्मूलन के लिये सिर कटाये जीवन दिये उनका इतिहास क्यों नहीं पढ़ाया जाता? क्या यह अन्याय व अनर्थ नहीं? वीर रामचन्द्र, भक्त फूलसिंह, वीर मेघराज, महात्मा श्रद्धानन्द, दक्षिण में श्री श्यामभाई ने जीवन वीर दिये। उनके नाम पर समरसता दिवस कहीं भी सरकारें नहीं मनातीं। मास्टर आत्माराम जी के नाम पर गुजरात में यह दिवस क्यों न मनाया जावे। पातूर (नागपुर के पास) के शिवरत्न को अपनी पुत्री का विवाह जाति बन्धन तोड़कर करने पर महाराष्ट्र छोड़ पंजाब जाना पड़ा। श्यामजीकृष्ण वर्मा का विवाह सबसे पहला अन्तरजातीय विवाह था। उनके नाम पर यह दिवस क्यों न हो?

लाला बलराज भल्ला क्रान्तिकारी जनसंघ के पहले प्रधान थे। श्री डॉ. श्यामप्रसाद मुखर्जी संस्थापक प्रधान नहीं। इतिहास का गला क्यों घोंटा जा रहा है। हिन्दू समाज के दोषों, दुर्बलताओं, अन्धविश्वासों, कुरीतियों, अन्यायपूर्ण परम्पराओं को छुपाना न हितकर है, न यह इतिहास है, न सत्य है और न देश-जाति की सेवा। गुण को गुण और दोष को दोष मानने से समाज स्वस्थ होकर उन्नत होगा। इस यथार्थ इतिहास पर अगले अंक में प्रकाश डालेंगे।

वैदिक पुस्तकालय अजमेर द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर विशेष छूट

१. कुल्लियाते आर्य मुसाफिर (पं. लेखराम ग्रन्थ संग्रह)- दो भाग

लेखक- पण्डित लेखराम

सम्पादक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर, पंजाब

मूल्य- रुपये ~~९००~~/- **छूट पर**- ६००/-

२. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (दो भाग में)

मूल्य - रुपये ~~८००~~/- **छूट पर** - ५००/-

३. अष्टाध्यायी भाष्य- ३ भाग (१ सैट)

भाष्यकार- महर्षि दयानन्द सरस्वती

मूल्य- रुपये ~~५००~~/- **छूट पर**- ३५०

पुस्तकें हेतु सम्पर्क करें:-

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से क्रय की जाने वाली पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु

खाता धारक का नाम - **वैदिक पुस्तकालय, अजमेर**। दूरभाष - **0145-2460120**

बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या - **0008000100067176**

IFSC - PUNB0000800

वेद ईश्वरीय ज्ञान है

पं. यशःपाल सिद्धान्तालङ्कार

आर्य जाति के पूर्व विद्वानों, ऋषियों, मुनियों तथा जन साधारण का अनादिकाल से यह विश्वास चला आया है कि वेद ईश्वरप्रणीत होने से अपौरुषेय अतएव निर्भ्रान्त हैं। वेद, अनादि, अनन्त और नित्य हैं। वेद में शब्दार्थ-संबन्ध भी नित्य है। वैदिक धर्म का मुख्य सनातन सिद्धान्त यह है कि वेद सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व निर्मित हुए। सब ज्ञान और विद्याओं का मूल वेद में है। वेद से ही सब ज्ञान साक्षात् अथवा परम्परा से उत्पन्न हुआ और वैदिक सत्य का ही समयान्तर में विकास हुआ। संसार के सब माननीय तथा प्रचलित धर्मों और धर्मग्रन्थों में सत्य का जो अंश उपलब्ध होता है उसका सम्बन्ध परम्परा रूप से वेदों के ही साथ है। ब्रह्मा से लेकर ऋषि दयानन्द पर्यन्त आर्यावर्त्त में जितने विद्वान्, महात्मा, ऋषि और मुनि हुए हैं उनका सदा से ही यह विश्वास चला आया है कि वेद परमात्मा की वाणी है। सृष्टि के आरम्भ में मनुष्यों को धर्माधर्म, पाप-पुण्य, कर्त्तव्याकर्त्तव्य का ज्ञान देने के लिये परमात्मा ने वेद का ज्ञान दिया। यदि सृष्टि के प्रारम्भ में परमात्मा कोई ज्ञान न दे तो उस समय के मनुष्यों को धर्माधर्म का ज्ञान स्वतः नहीं हो सकता। मनुष्य की बुद्धि धर्माधर्म का ज्ञान करने में अपर्याप्त है। बड़े-बड़े विद्वानों की बुद्धि भी इसके निर्णय करने में कई बार असमर्थ हो जाती है। कर्त्तव्याकर्त्तव्य विवेक अत्यन्त कठिन है।

वेद के ईश्वरीय ज्ञान होने में वेद का प्रमाण

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत।।

यजुर्वेद ३१।७।

अर्थात् उस सर्वहुत (सर्वपूर्ण) पुरुष से ऋग्वेद, सामवेद, छन्दांसि (अथर्ववेद) और यजुर्वेद उत्पन्न हुए। उक्त मन्त्र में **यज्ञ** शब्द विष्णु का वाचक है। शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि **''यज्ञो वै विष्णुः''** अर्थात् सर्वव्यापक भगवान् विष्णु को यज्ञ कहते हैं। तात्पर्य यह है कि उस सर्वव्यापक परमेश्वर से चराचर सृष्टि उत्पन्न हुई और मनुष्य की सहायता के लिये, जो इस सृष्टि के विषय में विचार करने को समर्थ है, वेद भी उसी परमात्मा से उत्पन्न हुए।

यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्।
सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखम्
स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः।

अथर्व. १०।प्रपा.२३, अनु. ४।मं. २०।

जिस सर्वशक्तिमान् परमात्मा से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद उत्पन्न हुए हैं वह देव कौन है? यह प्रश्न है। इसका उत्तर वेद के इसी मन्त्र में दिया है कि ऋग्वेद का पैदा करने वाला स्कम्भ अर्थात् सारे संसार का धारण करने वाला परमात्मा है।

इसका भावार्थ यह है कि याज्ञवल्क्य ऋषि कहते हैं ''हे मैत्रेयि, उस महान् परमेश्वर से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद श्वासोच्छ्वास के समान सहज ही प्रकट हुए।'' जैसे मनुष्य का श्वास सहज ही भीतर से बाहर निकलता है और फिर भीतर चला जाता है उसी तरह वेद सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व परमेश्वर से सहज उत्पन्न होते हैं और सृष्टि के अन्त में (प्रलय के समय) उसी परमेश्वर में लीन हो जाते हैं। 'वेद सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व उत्पन्न हुए', इससे यह भी नितान्त स्पष्ट हो जाता है कि परमात्मा का मनुष्य जाति पर कितना अनुग्रह है। मनुष्य शब्द की व्युत्पत्ति यह है कि **'मननात् मनुष्यः'** अर्थात् जो मनन कर सकता है उसे मनुष्य कहते हैं।

यद्यपि मनुष्य विचारवान् होने से तथा बुद्धियुक्त होने से विचार करने का सामर्थ्य रखता है और वह इस सृष्टि के घटनाचातुर्य और तन्नियामक शक्तियों का ज्ञाता है, तथापि यदि उसे किसी निर्जन वन में रख दिया जाय जहाँ मृत्यु-पर्यन्त उसका किसी भी मनुष्य से संबन्ध न हो तो वह केवल अपनी बुद्धि के आधार पर कभी भी उन्नति न कर सकेगा और सर्वथा ज्ञान-शून्य रहेगा। यदि परमात्मा सृष्टि के प्रारम्भ में वेद का ज्ञान न देता तो अभी तक सब मनुष्य पशु के समान बने रहते। मनुष्य का ज्ञान केवल परावलम्बी

है। जैसे बिना उसकी सहायता के न तो आँखें कुछ देख सकती हैं और न कान कुछ सुन सकते हैं वैसे ही मनुष्य का स्वाभाविक ज्ञान चतुर्विध पुरुषार्थ की प्राप्ति में बिना वेद की सहायता के असमर्थ है।

अन्यत्रमना अभूवं नादर्श अन्यत्रमना अभूवं नाश्रौषम्।

यह बृहदारण्यक का वचन है। यदि मन स्थिर न हो या किसी उपाधि के कारण व्यापार विमुख हो जाय तो सम्पूर्ण ज्ञानेन्द्रियों के उपस्थित रहने पर भी किसी कार्य को करने में इन्द्रियाँ सर्वथा असमर्थ हैं। सारांश यह है कि जैसे मन की सहायता के बिना ज्ञानेन्द्रियाँ निरुपयोगी हो जाती हैं वैसे ही ईश्वरीय ज्ञान के बिना मन तथा बुद्धि विकसित नहीं हो सकती और मनुष्य चतुर्विध पुरुषार्थ के सम्पादन में असमर्थ हो जाता है।

वेद के ईश्वरीय तथा नित्य होने में ऋषियों की सम्मति

वैशेषिक सूत्रकार कणाद मुनि कहते हैं कि-

तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम्। वैशेषिक १।१।३।

अर्थात् वेद ईश्वरोक्त हैं। इनमें सत्य-विद्या और पक्षपातरहित धर्म का ही प्रतिपादन है। इससे चारों वेद नित्य हैं। ऐसा ही सब मनुष्यों को मानना उचित है। क्योंकि ईश्वर नित्य है अत: उसका ज्ञान भी नित्य है।

इसी प्रकार न्यायशास्त्र में गौतम मुनि कहते हैं कि-

''मन्त्रायुर्वेदप्रामाण्यवच्च तत्प्रामाण्यमाप्तप्रामाण्यात्।'' २।१।६७।

अर्थात् वेदों को नित्य ही मानना चाहिए क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज पर्यन्त ब्रह्मादि जितने आप्त होते आये हैं वे सब वेदों को नित्य ही मानते आये हैं। आप्त पुरुषों का कथन प्रामाणिक होता है क्योंकि आप्त उन्हें कहते हैं जो धर्मात्मा, कपट, छलादि दोषों से रहित, सब विद्याओं से युक्त महायोगी ओर सत्यवक्ता हैं, जिनमें लेशमात्र भी पक्षपात नहीं था, उन्होंने वेदों को ईश्वरप्रणीत तथा प्रामाणिक माना है। जैसे आयुर्वेद के एक देश में कहे औषध और पथ्य के सेवन से रोग की निवृत्ति होती है और उनके एक देश में कथित बात के सत्य होने से उसके दूसरे भाग का भी प्रमाण होता है उसी प्रकार वेद के एक देश में कहे अर्थ की सत्यता सिद्ध होने से उससे भिन्न जो वेदों के भाग हैं जिनका कि अर्थ प्रत्यक्ष न हुआ हो उनको भी प्रामाणिक मानना चाहिए।

योगशास्त्र में पतञ्जलि मुनि कहते हैं-

''स एष पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्।''

पातञ्जल योगशास्त्र १।१२६

अर्थात् सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न अग्नि, वायु, आदित्य, अङ्गिरा इत्यादि ऋषियों से लेकर अद्यावधि जितने भी मनुष्य पैदा हुए हैं और भविष्य में होंगे उन सबका आदि गुरु परमेश्वर है, क्योंकि वेद द्वारा सत्यार्थ का प्रकाश करने से। परमात्मा सृष्टि के आरम्भ में वेद का ज्ञान न देता तो मनुष्यों की अवस्था सर्वथा पशुतुल्य होती तथा धर्माधर्म, विवेक और सदसद् विचार में मनुष्य सर्वथा असमर्थ होता।

सांख्यशास्त्र में कपिल मुनि कहते हैं कि-

''निजशक्त्यभिव्यक्तेः स्वतःप्रामाण्यम्'' १।४१

परमेश्वर की स्वाभाविक विद्या तथा ज्ञान-शक्ति से प्रकट होने से वेदों का नित्यत्व और स्वतःप्रमाणत्व सब मनुष्यों को स्वीकार करना चाहिए।

वेदान्तशास्त्र में व्यास मुनि कहते हैं-

शास्त्रयोनित्वात्।१-१-३।।

अर्थात् ऋग्वेदादि चारों वेद अनेक विद्याओं से युक्त हैं और सूर्य के समान सब अर्थों का प्रकाश करने वाले हैं। इनका बनाने वाला सर्वज्ञतादि गुणों से युक्त परमात्मा है, क्योंकि सर्वज्ञ ब्रह्म से भिन्न कोई सर्वज्ञतागुणयुक्त वेदों का निर्माण नहीं कर सकता, किन्तु वेद के आधार पर ही अन्य शास्त्रों के बनाने में समर्थ हो सकता है जैसे पाणिनि आदि मुनियों ने व्याकरणादि शास्त्रों को बनाया है, उनमें विद्या के एक-एक भाग का प्रकाश किया है। सब विद्याओं से युक्त वेदों के बनाने में कोई समर्थ नहीं हो सकता। परमेश्वर निर्मित वेदों के पढ़ने-विचारने और उसी के अनुग्रह से मनुष्यों को ज्ञान प्राप्त होता है, अन्यथा नहीं।

कई लोगों को यह शङ्का होती है कि निराकार ईश्वर से शब्दमय वेद कैसे उत्पन्न हो सकते हैं। इसका उत्तर यह है कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान् है। उसके विषय में ऐसी शंका निरर्थक है क्योंकि मुख, प्राणादि साधनों के बिना भी परमेश्वर में मुख, प्राणादि के कार्य करने की सामर्थ्य विद्यमान है। यह दोष तो जीव में आ सकता है कि वे मुखादि के बिना कार्य नहीं कर सकते क्योंकि मनुष्य

अल्पसामर्थ्य वाला है। साथ ही इस बात को इस तरह भी समझा जा सकता है कि जैसे मन में मुखादि अवयव नहीं हैं तथापि उसमें प्रश्नोत्तर रूप से नाना शब्दों का उच्चारण मानस-व्यापार में होता रहता है वैसे ही परमेश्वर में भी जानना चाहिये। वैसे भी सर्वशक्तिमान् होने से परमात्मा किसी भी कार्य के करने में किसी की सहायता की अपेक्षा नहीं रखता क्योंकि वह अपने सामर्थ्य से ही सब कार्यों को कर सकता है। इतने महान् ब्रह्माण्ड तथा लोकलोकान्तरों को बिना किसी की सहायता के जैसे परमात्मा निर्माण कर सकता है वैसे ही मुखादि अवयव के बिना भी परमेश्वर वेद का ज्ञान दे सकता है। इस पर यह भी शङ्का हो सकती है कि इतने महान् ब्रह्माण्ड के रचने का सामर्थ्य तो परमेश्वर के बिना अन्य किसी में होना सम्भव नहीं, परन्तु जैसे व्याकरणादि शास्त्र के रचने में मनुष्यों का सामर्थ्य हो सकता है वैसे ही वेदों की रचना भी मनुष्य कर सकता है। इसका उत्तर यह है कि वेदादि को पढ़कर ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद ही ग्रन्थ रचने का सामर्थ्य किसी को हो सकता है। उसके पढ़ने तथा ज्ञान के बिना कोई भी मनुष्य विद्वान् नहीं हो सकता। जैसे इस समय भी किसी शास्त्र को पढ़कर और किसी का उपदेश सुनकर ही तथा मनुष्यों के पारस्परिक व्यवहारों को देखकर ही मनुष्यों को ज्ञान होता है। उदाहरणार्थ किसी मनुष्य के बालक को जन्म से एकान्त में रखके, उसको अन्न तथा फल युक्ति से देवे, परन्तु उस के साथ भाषणादि व्यवहार लेशमात्र भी न करे और मृत्युपर्यन्त उससे किसी भी मनुष्य का संबन्ध न होने दे तो वह कभी भी विद्वान् नहीं हो सकता और सभ्यता तथा ज्ञान की साधारण बातों से भी अनभिज्ञ रहेगा। असीरिया के महाराज असुरवाणिपाल तथा मुगलसम्राट् अकबर के परीक्षण इस बात के ज्वलन्त प्रमाण हैं।

वेदों की उत्पत्ति ईश्वर से होने के कारण यह भी निर्विवाद है कि वेद नित्य अर्थात् त्रिकालाबाधित हैं और उनके सिद्धान्त सर्वव्यापक हैं, क्योंकि ईश्वर का सामर्थ्य नित्य है। वेदों का कभी नाश नहीं होता। जिस पत्र पर वेद लिखे गये हैं उनका नाश होने पर भी वेद-ज्ञान का कभी नाश नहीं होता। पठन-पाठन परम्परा का लोप हो जाने पर भी वह ईश्वरीय ज्ञान नष्ट नहीं होता। इसका कारण यह है कि ईश्वर के पास वेदज्ञान सदा विद्यमान रहता है। वह स्वयं वेदरूप अर्थात् ज्ञानरूप है। ईश्वरीय ज्ञान नित्य और अव्यभिचारी है। इसलिये वेदों का शब्दार्थ संबन्ध जैसा वर्तमान समय में दीख पड़ता है वैसा ही वह पूर्व कल्पों में था और वैसा ही भविष्य में रहेगा, जैसा कि वेद में कहा है कि-

"सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्"

अर्थात् पूर्वकल्पों में परमेश्वर ने सूर्यचन्द्रादि सारी सृष्टि की जैसी रचना की थी वैसी ही उसने इस सृष्टि की भी की है। ईश्वरीय ज्ञान पूर्ण है अर्थात् न उसका नाश होता है और न उसमें वृद्धि होती है। यद्यपि ईश्वरीय ज्ञान अनन्त है, तथापि वेद द्वारा परमात्मा उतना ही ज्ञान देता है जितना कि मनुष्य के लिये आवश्यक है। जिसके द्वारा मनुष्य अभ्युदय तथा निःश्रेयस की प्राप्ति कर सके। यह बात भली प्रकार समझ लेनी चाहिये कि पुस्तक के नाश से वेद का नाश नहीं हो सकता, क्योंकि वेद तो शब्दार्थ-संबन्ध स्वरूप हैं, मसि, कागज, पत्र, पुस्तक और अक्षरों की बनावटरूप नहीं। यह जो लेखनादि सामग्री है यह मनुष्य निर्मित है। इससे यह अनित्य है, परन्तु ईश्वरीय ज्ञान नित्य है। इससे यह पूर्णतया स्पष्ट है कि पुस्तक के अनित्य होने से वेद अनित्य नहीं हो सकते क्योंकि वे बीजाङ्कुरन्याय से ईश्वर के ज्ञान में नित्य वर्तमान रहते हैं। सृष्टि के प्रारम्भ में ईश्वर से वेदों की प्रसिद्धि होती है ओर प्रलय में जगत् के रहने से उनकी अप्रसिद्धि होती है। इस कारण से वेद नित्यस्वरूप ही बने रहते हैं। जैसे इस कल्प के आरम्भ में शब्दार्थ-संबन्ध वेदों में है इसी प्रकार से पूर्वकल्प में भी था और आगे भी होगा। ऋग्वेदादि चारों वेदों की संहिता अब जिस प्रकार की है और इसमें शब्दार्थ-संबन्ध तथा क्रम जैसा अब है इसी प्रकार रहेगा, क्योंकि ईश्वरीय ज्ञान के नित्य होने से उस में वृद्धि, क्षय तथा विपरीतता नहीं हो सकती। भारतीय शास्त्रकारों ने शब्दों को भी नित्य माना है। जितने भी अक्षरादि अवयव हैं, वे सब कूटस्थ अर्थात् विनाशरहित हैं। कान से जिनका ग्रहण होता है और वाणी से उच्चारण करने से प्रकाशित होते हैं और जिनका निवास-स्थान आकाश है उनको शब्द कहते हैं। शब्द आकाश की भाँति सर्वत्र विद्यमान हैं, परन्तु जब तक उच्चारण क्रिया नहीं होती तब तक वे सुनने में नहीं आते।

जब प्राण तथा वाणी की क्रिया से उच्चारण किये जाते हैं तब प्रसिद्ध होते हैं। जैसे 'ग:' इसके उच्चारण में जब तक उच्चारण क्रिया गकार में रहती है तब तक औकार में नहीं, जब औकार में है तब गकार और विसर्जनीय में नहीं रहती। इसी प्रकार वाणी की क्रिया की उत्पत्ति और नाश होता है, शब्दों का नहीं। किन्तु आकाश में शब्द की व्याप्ति होने से शब्द तो अखण्ड एकरस सर्वत्र भर रहे हैं, परन्तु जब तक वायु तथा वाग् इन्द्रिय की क्रिया नहीं होती तब तक शब्दों का उच्चारण तथा श्रवण भी नहीं होता। इससे यह स्पष्ट सिद्ध है कि शब्द आकाश की तरह नित्य हैं। शब्दों के नित्य होने से शब्दों का समुच्चय वेद भी नित्य है।

वेद का लक्षण

विद्याधर स्वामी ने वेदार्थ प्रकाश में वेद का लक्षण इस प्रकार से किया है-

''इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकं उपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः''

अर्थात् जो ग्रन्थ इष्ट वस्तु की प्राप्ति और अनिष्ट वस्तु के त्याग करने का अलौकिक उपाय सिखलाता है। उसको वेद कहते हैं। यहाँ 'अलौकिक' पद से प्रत्यक्ष और अनुमित प्रमाणों की व्यावृत्ति की गई है। जैसे-

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते।
एनं विन्दति वेदेन तस्माद्वेदस्य वेदता।।

अर्थात् जो उपाय, प्रत्यक्ष और अनुमान प्रमाणों से भी मालूम नहीं होता, वह वेदों से जाना जाता है। इसलिये वेदों का वेदत्व सिद्ध होता है।

ऋषि दयानन्द जी वेद का लक्षण इस प्रकार लिखते हैं कि छन्द, मन्त्र, वेद, निगम, मन्त्र तथा श्रुति ये सब नाम पर्यायवाचक हैं। अविद्यादि दुःखों के दूर करने तथा सुख देने से वेद का नाम 'छन्द' है। तथा वेदाध्ययन से सब विद्याओं की प्राप्ति होती है और उससे मनुष्य प्रसन्न होता है इसलिये भी वेद का नाम 'छन्द' है। गुप्त पदार्थों की अभिव्यक्ति का साधन होने से 'मन्त्र' नाम वेद का है तथा सब सत्य पदार्थों का परिज्ञापक होने से भी मन्त्र नाम वेद का है। सब विद्यायें जिससे सुनी या जानी जाती हैं, वह 'श्रुति' भी वेद का ही नाम है। ऋषि दयानन्द के अपने शब्दों में-

(१) अविद्यादिदुःखानां निवारणात् सुखैराच्छादनाच्छन्दो वेदः।

(२) गुप्तानां पदार्थानां भाषणं यस्मिन्वर्त्तते स मन्त्रो वेदः। अथवा मन्यन्ते ज्ञायन्ते सर्वैर्मनुष्यैः सत्याः पदार्थाः येन यस्मिन्वा स मन्त्रो वेदः (३) श्रूयन्ते वा सकला विद्या यया सा श्रुतिर्वेदो मन्त्रश्च श्रुतयः।(४) तथा निगच्छन्ति नितरां जानन्ति प्राप्नुवन्ति वा सर्वाविद्या यस्मिन् स निगमो वेदो मन्त्रश्चेति।

साभार 'वैदिक सिद्धान्त'

गुरुकुल के लिये प्रवेश-सूचना

परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान-अजमेर में वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज के उपदेशक तैयार करने हेतु उपदेशक कक्षा में प्रवेश प्रारम्भ हैं।

प्रवेशार्थी की न्यूनतम आयु १४ वर्ष तथा कक्षा आठ या उससे अधिक उत्तीर्ण हो। आर्ष-पद्धति से व्याकरण, दर्शन तथा महर्षि निर्दिष्ट पाठ्यक्रम के अध्यापन की व्यवस्था है।

गुरुकुल में अध्यापन, भोजन एवं आवास की निःशुल्क व्यवस्था है।

प्रवेश के इच्छुक अभ्यर्थी सम्पर्क करें-

आचार्य, आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर।

दूरभाष- ०१४५-२४६०१६४, ०१४५-२६२१२७०

शास्त्रों के नाम पर भटकती तथाकथित प्रतिभाएं

पं. देवनारायण तिवारी

कुछ समय पूर्व ''द टेलीग्राफ'' समाचार-पत्र के मुखपृष्ठ पर न्यू दिल्ली के हवाले से अनीता जोशुआ (Anita Joshua) के माध्यम से एक समाचार (आलेख के रूप में) प्रकाशित हुआ। जिसका शीर्षक है- Patriot formula and Upanishad don't match honey who swallowed our baby-making beef? जिसमें खेद व्यक्त किया गया है कि- ''देशभक्ति सूत्र और उपनिषद् (दोनों परस्पर मेल नहीं खाते)'' प्रिये, कौन हमारे सन्तान-निर्माण के गोमांस को निगल गया?

इसका आरम्भ महाभारत के युद्धान्तर्गत महाभारत प्रकरण से किया गया है-जो मात्र एक बालबुद्धि का द्योतक है, क्योंकि उपरोक्त लेखान्तर्गत विषयों से इस कथन का कोई रंचक भी मेल (संबन्ध) नहीं है। वह उस काल का वर्तमान रण-धर्म था जो द्रोणाचार्य जैसे अन्याय पक्षधारी एवं अनैतिक अधर्म युद्धकर्ता के वध के लिए उपर्युक्त धर्म था।

अस्तु! लेख में प्रस्तुत भावनाओं से यह लगता है कि सन्तान-निर्माण के पक्ष में उत्तम सन्तानों के निर्माण के लिए उत्तम ''गर्भाधान संस्कार'' होना आवश्यक है, परन्तु वेद, शास्त्र, उपनिषद् आदि आर्ष ग्रन्थों के यथार्थ बोध के अभाव में घृत के साथ गोमांस सेवन करने का प्रावधान उसने सन्तानकर्ता दम्पती के सेवन हेतु अनिवार्य माना है, जो मात्र लेखिका के भ्रम और अविद्याजनक बुद्धि का एकमात्र दोष ही है क्योंकि किसी भी वैदिक-आर्ष ग्रन्थ में उपरोक्त संस्कार में गोमांस अथवा किसी भी प्रकार के मांस-सेवन का उल्लेख नहीं है। इतिहासकार Mr. D.N.Jha का उद्धरण भी इस सन्दर्भ में नितान्त असत्य और भ्रामक है, इससे तो यह सिद्ध होता है कि श्रीमान् डी.एन. झा भी इन विषयों से अनभिज्ञ हैं। उन्होंने अपना विवेकाधार खोकर मात्र किसी अन्य लेखक का आधार लिया है अन्यथा वे ऐसा प्रश्न नहीं करते जैसे कि उक्त समाचार के आलेख में उद्धृत है। क्योंकि कोई भी शिक्षित, संस्कारित, सभ्य दम्पती उत्तम सन्तानों की प्राप्ति के हेतु घृत और भात के साथ गोमांस अथवा वत्स-मांस या अन्य कोई भी मांस-सेवन उपयुक्त नहीं मानेगा और न ही इन पदार्थों के सेवन करने से उत्तम सन्तानें प्राप्त हो सकती हैं। मांस तो स्वत: ही एक तामसी पदार्थ है। Mr. D.N.Jha ने जो सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन की " The Principle of Upanishad" पुस्तक का उल्लेख किया है, उसमें भी इस प्रकार के तामसी आहार का उल्लेख नहीं है और यदि मान भी लूँ कि उन्होंने वहाँ इस प्रकार का समर्थन वाक्य लिखा भी हो तो उस विषय में मैं उन्हें ऋषि-कोटि का वेद शास्त्र पारंगत विद्वान् नहीं मानूँगा।

अब उस मूल विषय की चर्चा करता हूँ जो उक्त लेख में बहुत ही विवादित और अज्ञानपूर्ण कथन लगता है। इसके लिखने वाले में स्वयं का कोई अपना ज्ञान नहीं है, मात्र अन्यों के कथन पर ही अपने कथन को आधारित किया है, क्योंकि उसका उद्धरण भी अधूरा है। उस कण्डिका (श्लोक) के अर्थ का जो अज्ञानपूर्ण अनर्थ लिखा है वह चिन्तनीय है। आइये उस प्रकरण को मैं स्पष्ट कर देता हूँ। रॉबर्ट अर्नेस्ट ह्यूम ने यदि उक्त कण्डिका का गोमांस के साथ चावल-घृत खाने का अनुवाद किया है तो उन्हें मैं इस क्षेत्र में एक अबोध बालक की तरह मानूँगा जिसने कि ABCD की भी शिक्षा न प्राप्त की हो और अपने को महाविद्वान् मानता हो। अब प्रश्न है कि यदि बृहदारण्यक उपनिषद् में कहीं ऐसा लिखा ही नहीं है जिसके आधार पर उक्त कथन-कारिका ने यह प्रस्तुत कर दिया है तो किसी भी दम्पती के साथ अन्याय कैसे होगा, जिसके लिये लेख में रोना रोया गया है। स्वयं अज्ञान के अन्धेरे में भटक कर ऐसा व्यक्ति R.S.S. या किसी भी गोभक्त का नाम बदनाम करे तो वह कितना बुद्धिमान् माना जाय, यह निर्णय तो इसके पाठक स्वयं करें। इस प्रकार के पूर्ण ज्ञान के लिए बृहदारण्यक उपनिषद् के अध्याय ६ में ब्राह्मण ३ की प्रथम कण्डिका से लेकर चौथे अध्याय की २८ वीं कण्डिका तक का स्वाध्याय अनिवार्य होगा तभी पूरा अर्थ

निकलेगा, अन्यथा अधूरे अध्ययन से तो अधकचरा ज्ञान ही होगा। यहाँ मैं लेख विस्तार के कारण पूरा न लिखकर मात्र इतना ही संकेत करना चाहूँगा कि ६ वें अध्याय की १२ वीं से १८ वीं कण्डिका तक भी देख लें तो अर्थ-प्रकरण समझ में आ जाय। जिसमें उत्तम सन्तानों के निर्माण की पूर्ण विधि इच्छित दम्पतियों के लिए निर्दिष्ट है। जो कोई सज्जन या लेखक-विचारक एतद्विषयक ज्ञान की जिज्ञासा रखते हैं उन्हें मैं छठे अध्याय के चौथे ब्राह्मण की १३ वीं कण्डिका से पढ़ने का आग्रह करूँगा, क्योंकि मात्र १८ वीं कण्डिका ही पढ़ने से भी अपूर्ण ज्ञान होगा। १४ वीं कण्डिका में **''क्षीरौदनम् पाचयित्वा सर्पिष्मन्तम् अश्नीयाताम्''** अर्थात् चावल की खीर बनाकर पति-पत्नी खावें। १५ वीं में **''दध्योदनम् पाचयित्वा सर्पिष्मन्तम् अश्नीयाताम्''** अर्थात् भात के साथ दही और घृत मिलाकर खायें। सोलहवीं कण्डिका में **''उदौदनम् पाचयित्वा''** अर्थात् पानी में भात पकाकर घृत मिलाकर खावें। १७ वीं में **तिलौदनम् पाचयित्वा...**। अर्थात् तिल मिश्रित चावल पकवाकर घी मिलाकर खावें। १८ वीं कण्डिका में (जिसका कि उल्लेख उक्त आलेख में किया गया है) **माषौदनम् पाचयित्वा सर्पिष्मन्तमश्नीयातामीश्वरौ जनयित वा औक्षेण वा आर्षभेण वा** लिखा हुआ है जिसमें कि औक्ष तथा आर्षभ शब्द पर लेखिका को गोमांस और वत्स-मांस ज्ञात हो रहा है। इन सभी उपरोक्त कण्डिकाओं में विविध प्रकार की गुणवाली उत्तम सन्तानों की प्राप्ति का उपदेश है। जिसका प्रयोग इच्छित दम्पती यथेच्छ विधि से करें। इन सभी कण्डिकाओं में अपेक्षित साधनों को काम में लाने की शिक्षाओं को समाप्त करते हुए बताया गया है कि ये सभी प्रकार के पुत्रों के उत्पन्न आदि के कृत्य औक्ष और आर्षभ विधि से करने चाहिये।

औक्ष विधि- औक्ष शब्द **उक्ष सेचने** धातु से बना है। उक्ष से उक्षन् और **उक्षण** का विशेषण **औक्ष** है। किसी मिश्रित औषधि पाक आदि के बनाने में कौन-कौन औषधि किस-किस मात्रा में पड़नी चाहिए ऐसा बतलाने वाले शास्त्र को **औक्ष-शास्त्र** अर्थात् **वैद्यक-शास्त्र** कहते हैं। औक्षेण का अर्थ है औक्ष शास्त्र के अनुसार- न कि बछड़े का मांस।

आर्षभ विधि- आर्षभ-ऋषभ शब्द का विशेषण है। **ऋषभ** और **ऋषि** शब्द एकार्थक (पर्यायवाचक) है। वा माने होता है अथवा (या) अनीता जोशुआ ने जो १८ वीं कण्डिका उद्धृत की है। उसमें स्पष्ट लिखा है-औक्षेण वा आर्षभेण वा अर्थात् औक्ष विधि से अथवा ऋषभ विधि से उड़द के साथ चावल पकवा, घृत में मिला दोनों (दम्पती) खावें। अब यहाँ इनको कहाँ से गोमांस और वत्स-मांस अर्थ दिखाई पड़ गया यह एक आश्चर्य ही है। इसी प्रकार माषौदन का अर्थ किसी ने मांसौदन कर दिया और उसे इन्होंने गोमांस समझ लिया। मांस केवल पशु-पक्षी आदि जीवधारियों के मांस को ही नहीं कहते अपितु अनेक औषधियाँ एवं कुछेक फलों के गूदे तथा चावल के चूर्ण वा उसके लाल कणों को भी आयुर्वेद शास्त्रों में मांस कहा गया है। **दशांग लेप** नामक एक औषधि का योग (फार्मूला) है-

शिरीष यष्ठी नत चन्दनेला मांस हरिद्राद्वय कुष्ठ बालै।
लेपो दशांगः सघृत प्रयोगा, विसर्प कण्डू ज्वर शोथ हारी।।
(शारङ्गधर संहिता ज्वाराधिकारे)

उपरोक्त योग में मांस शब्द जटामांसी जड़ी के लिए प्रयुक्त हुआ है। अर्थात्-शिरीष (सिरसा की छाल), यष्ठी (मुलहठी), नत (तगर), चन्दन (सफेद चन्दन), ऐला (छोटी इलायची), हरिद्राद्वय (दोनों हल्दी), (१) खाने की और (२) आँबा हल्दी, मांस (जटामांसी) कुष्ट (कूठ), बालै (नेत्रवाला)। इन दश औषधियों को समान भाग लेकर चूर्ण बना शतधौत (सौ बार धोये हुये) घी में मिलाकर लेप करने से उच्चतापी ज्वर, विसर्प (पित्ती), कण्डू (खुजली-एग्जिमा आदि (चर्मरोग) शोथ (सूजन) नष्ट होते हैं। सुश्रुत संहिता-चिकित्सा स्थान में अंकित है-

''यः आमं मांस खादति स दीर्घजीवी पुष्टी भवेत्।''

अर्थात् जो आम का मांस खाता है, वह दीर्घायु और पुष्ट होता है। इसी प्रकार अन्य स्थानों पर भी चिकित्सा-पद्धति और यज्ञ-पद्धतियों में अनेक औषधियों, वनस्पतियों, फलों, अन्नों के नाम आये हैं जो पशुओं-पक्षियों आदि जीवों के भी नाम हैं। जैसे-अम्ब (माँ, आम, अम्बष्ठा बूटी)

शतं वो अम्ब धामानि सहस्त्रमुत वो रुहः।

अधा शतक्रत्वो यूयमिमं मेऽअगदं कृत।।

(यजुर्वेद १२।७६)

हे अम्ब! तुम्हारे सैकड़ों स्थान हैं और तुम हजारों प्रकार से उगती हो तुम मेरे यज्ञ में आओ (अर्थात् मैं तुम्हें ले आऊँ) और सबको अगद (नीरोग) करो। यहाँ अम्ब से अम्बष्ठा औषधि का ग्रहण होगा। जो किसी भी संक्रामक रोग की महौषधि है। भाव प्रकाश में एक दवा बनाने में लिखा है **प्रास्थं कुमारिका मांसम्** अर्थात् एक सेर घृतकुमारी का मांस। यहाँ कुमारिका (घृतकुमारी-एलोवेरा) मांस (उसका गूदा) लिया जायेगा। सुश्रुत संहिता में आम के फल का वर्णन करते हुए लिखा है-

आम्रास्यानुफले भवन्ति युगपन्मांसास्थिमज्जादयो।
लक्ष्यन्ते न पृथक्-पृथक् तनुतया पुष्टस्तेव स्फुटा।।

(आदि)

अर्थात् कच्चे आम के फल में मांस, अस्थि और मज्जा पृथक्-पृथक् नहीं दिखलाई पड़ते किन्तु पकने पर वे ज्ञात होते हैं। इसी प्रकार सुश्रुत में भी-

अपक्वे आम्रफले स्नाय्वस्थि मज्जानः सूक्ष्मत्वान्नोपलभ्यन्ते। पक्वे त्वाऽविभूता उपलभ्यन्ते।।

इसका भी अर्थ इसी प्रकार ऊपर वाले श्लोक के समान है। कच्चे आम में मज्जा, मांस, अस्थियाँ, नसें प्रतीत नहीं होते किन्तु पकने पर सब प्रकट हो जाते हैं।

च्यवनप्राश के फार्मूले में अष्टवर्ग की दवाइयाँ पड़ती हैं। वे हैं, जीवक, २. ऋषभक, ३. मेदा, ४. महामेदा, ५. काकोली, ६. क्षीरकाकोली, ७. ऋद्धि, ८. वृद्धि, अब इसमें मेदा, जीवक और ऋषभ से क्या ग्रहण होगा।

उदाहरण के लिए और भी बहुत से पशुसंज्ञक नाम वनस्पतियों के लिए आए हैं। कुछ शब्दों का नमूना देखें।

१. वृषभ (बैल, ऋषभकन्द) २. श्वान (कुत्ता, ग्रन्थिपर्णी घास) ३. मर्जार (बिडाल, बित्ता घास) ४. मयूर (मोर, मयूरी घास) ५. वृश्चिक (बीछी, बिच्छुबूटी) ६. अश्व (अश्वगन्धा, अजमोदा, घोड़ा) ७. हंस (हंसपदी बूटी) ८. गौ (गोजिह्वा, गोलोभी) ९. मूषक (चूहा, मूषाकर्णीबूटी) १०. खर (गदहा, खरपर्णी) ११. काक (कौआ, काकजंघा, काकमाची, मकोय) १२. वाराह (सूअर, वराहीकन्द) १३. महिष (भैंस, महिषाक्ष, गुग्गुल) १४. श्येन (बाजपक्षी, दन्ती जड़ी) १५. मेष (भेड़, जीवशाक) १६. कुक्कुट (मुर्गी-मुर्गा, शाल्मली=शीशम वृक्ष) १७. नर (मनुष्य, सौगन्धिक तृण) १८. मृग (सहदेवी बूटी, इन्द्रायण, जटामांसी, कर्पूर, हिरण) १९. हस्ती (हाथी, हस्तिकन्द, हस्तिशुण्डी जड़ी) २०. वपा (चमड़े की झिल्ली, पेड़ का वक्कल जाला) २१. अस्थि (हड्डी, गुठली) २२. मांस (गूदा, जटामांसी आदि) २३. चर्म (वक्कल) २४. रुधिर (केशर) २५. हृद (दालचीनी, हृदय कलेजा) आदि-आदि सैकड़ों प्रमाण इस प्रकार मैं दे सकता हूँ।

वास्तव में यहाँ मूल अर्थ जो लेखिका को भ्रान्ति हुई है वह बिना वेद-शास्त्र के अध्ययन से। यहाँ प्रकरण है गर्भाधान संस्कार द्वारा उत्तम सन्तानों की प्राप्ति का, जिसमें एक प्रकार का विशेष द्रव्य जिसे मंथ कहते हैं, बनाने का विधान है और उसके साथ सर्वोषधि मिलाकर उसे सेवन का तथा उसी मंथ के द्वारा यज्ञ करने का विधान है। वह मंथ यजुर्वेद के १८ वें अध्याय के १२ वें मन्त्र में वर्णित अन्नों के द्वारा बनाया जाय जो बृहदारण्यक उपनिषद्कार ने भी लिखा है। मन्त्र हैं।

व्रीह्यश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्य मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कलपन्ताम्। (उत्तम सन्तान हेतु) मनुष्यों को चाहिए कि चावल आदि से अच्छे प्रकार संस्कार किए हुए अन्नों से मंथ बनाकर अग्निहोत्र करें तथा आप खावें-खिलावें भी, १. व्रीहि=धान, २. जौ ३. तिल ४. माष (उड़द) ५. बाजरा ६. कंगनी ७. गेहूँ ८. मसूर ९. खल्व (मटर) १०. कुल्थी ११. नीवार (तालाबों में स्वतः उत्पन्न होने वाला धान की तरह की एक अन्न) १२. साँवा- इन सबको समान भाग ले, आटा पिसाकर उसमें दही, मधु और घृत से सिंचित कर उसी से यज्ञ करें तथा उसे सेवन भी करें। उसे और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए उसमें सात्त्विक फलों के ताजे गूदे को भी मिला लें फिर इसमें ईक्षा (गन्ने का रस) तथा सर्वोषधियों को मिला लें तो निश्चित ही उत्तम फलदायक होगा। १ भाग खाने की हल्दी २. भाग आँबा हल्दी, चन्दन सफेद, मुरा, कुष्ठ, जटामांसी, मोरबेल, शिलाजीत, कपूर, मोथा, नागर (मोथा) ये सर्वोषधियाँ हैं। इस विषय के पूर्ण ज्ञान के लिए

महर्षि दयानन्द कृत संस्कार विधि में गर्भाधान संस्कार का अध्ययन करना चाहिए।

अब इस विषय में मेरा कथन है कि बिना प्रकरण समझे ही इस प्रकार का वितण्डा खड़ा करना न तो समाचार-पत्र को उचित था और न अनीता जोशुआ को ही। इसे मैं मात्र R.S.S. या इस प्रकार गोभक्तों को लक्ष्य बनाकर उन्हें बदनाम करने का एक तरीका ही मानता हूँ- श्री डी.एन. झा को भी यह जानना चाहिए कि वास्तव में जो संस्कृत नहीं जानते उन्हें ही आप भ्रमित कर सकते हैं, पारङ्गत विद्वानों को नहीं।

मैं कहूँगा कि यदि अश्वत्थामा जैसे अन्यायियों के पास विध्वंसक नारायणास्त्र अभी है तो यह भी जान लें कि अभी भगवान् श्रीकृष्ण की भी वह दिव्य संजीवनी विद्या भी नहीं मरी है कि जिसके द्वारा उसका अस्त्र असफल हो गया था और उसे बाँधकर भी मृत्यु-दण्ड न देकर द्रौपदी ने अपनी क्षमाशीलता का परिचय देकर मात्र उसकी मणि (अर्थात् बुद्धि रूपी मणि) निकाल कर उसे पागल बनाकर छोड़ दिया था, वही गति आज के अश्वत्थामाओं की भी हो सकती है-श्रीकृष्ण के चातुर्य की धाक आधुनिक अश्वत्थामा रूपी खलों को आज भी बाध्य होकर माननी पड़ेगी। वह सभी समस्यायों का समाधान करेगा।

डॉ. करिश्मा मोहनदास नरवानी जी की गर्भ संस्कार योजना यदि पवित्र है तो अवश्य ही सराहनीय और ग्राह्य है। उन्होंने ठीक कहा कि (ऐसा गोमांस या वत्समांस खाने का) कोई नुस्खा उपनिषदों में नहीं है यह उनका कथन स्तुत्य है। इस कार्य की पूर्णता के लिए R.S.S. ही क्यों सारे गोभक्त प्रत्येक क्षण उनके साथ रहेंगे।

अन्त में यही कहना चाहूँगा कि यदि मनुष्यगण सुसंस्कृत, प्रतिभावान्, धार्मिक, तेजस्वी, स्वस्थ, सुन्दर सन्तानें चाहते हैं तो केवल गोमांस ही नहीं सब प्रकार के मांसों को वे त्याग दें। इससे अवश्य राष्ट्रीयता और मानवता को बल मिलेगा। विश्व से आसुर्य भाव भागेगा।

अग्नि और जल संसार के सब व्यवहारों के कारण हैं, इस से गृहस्थजन विशेषकर अग्नि और जल के गुणों को जानें और गृहस्थ के सब काम सत्य व्यवहार से करें।

– महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२४

ऋषि मेला २०१९ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला १, २, ३ नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१९ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉल लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उसी क्रम से स्टॉल का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉल की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधा:- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाइट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज-** ७.५×१५ फीट।

ध्यातव्य- **१.** स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। २. अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टैन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। **३.** बिस्तर, रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। ४. स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉल में सामान न रखें, न अधिकृत करें। ५. आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें। ६. अपना मोबाइल (चलभाष) नवम्बर देना अति आवश्यक है। ७. आप अपना स्थाई पता अवश्य देवें। ८. स्टॉल में आप पुस्तकें/दवाइयाँ/अन्य सामग्री का उल्लेख अवश्य करें। ९. स्टॉल आवंटन हेतु अग्रिम राशि जमा करावें, अन्यथा विचार सम्भव नहीं होगा। १०. एक पासपोर्ट फोटो भिजवावें, जो परिचय पत्र के साथ अंकित हो। उसमें स्टॉल आवंटन संख्या भी अंकित किया जाएगा। ११. स्टॉल आवंटन की सूचना निर्धारित अवधि में दी जायेगी। **नोट:-** किसी प्रकार का अवैदिक साहित्य एवं सामग्री न हो अन्यथा उचित कार्यवाही सम्भव होगी।

पुनर्जन्म से जीव की क्रमिक उन्नति

महात्मा चैतन्यमुनि

जन्म और मृत्यु की पहेली जनसाधारण के ही नहीं बल्कि बुद्धिजीवियों के लिए भी सदा से ही एक विचारणीय विषय रहा है। कुछ लोग बताते हैं कि व्यक्ति संसार में पैदा होता है और मरने के बाद पूरा किस्सा ही समाप्त हो जाता है मगर कुछ का मानना है कि शरीर के मरने के बाद भी जीवात्मा का अस्तित्व बना रहता है और उसके द्वारा किए गए कर्मों के आधार पर उसका पुनर्जन्म अवश्य होता है। कठोपनिषद् में युवक नचिकेता इसी रहस्य को यमाचार्य से जानने की जिज्ञासा करते हुए कहता है-

येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके
एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाहं वराणामेष वरस्तृतीयः।।

कठोपनषिद् १.२०।।

मनुष्य के मर जाने पर जिज्ञासा रहती है- कोई कहते हैं मरने पर भी मनुष्य बना रहता है, कोई कहते हैं नहीं बना रहता। आपसे शिक्षा पाकर मैं इसका समाधान जानना चाहता हूँ। मुझे जो वर माँगने हैं उनमें तीसरा वर यही है। पहले तो यमाचार्य उस नचिकेता की अनेक प्रकार की परीक्षा लेते हैं मगर बाद में आगे चलकर आत्मा की अमरता का सन्देश देते हुए कहते हैं-

न जायते म्रियते वा विपश्चिन्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित्।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

कठ. उ. २.१८।।

यह चेतन जीव न उत्पन्न होता है, न मरता है न यह किसी कारण से उत्पन्न हुआ है, न पहले कभी उत्पन्न हुआ था। यह अजन्मा है, नित्य है, निरन्तर है, पुरातन है, शरीर के मरने पर भी यह नहीं मरता।

साधारण व्यक्ति के मन में यह बात उतरती नहीं है क्योंकि भले ही वेद, उपनिषद् तथा गीता आदि ग्रन्थों में आत्मा को अजन्मा और अनादि कहा गया है मगर लोगों के मनों में यह धारणा बन जाती है कि चूँकि वे व्यक्ति का जन्म और मृत्यु होते हुए प्रतिदिन देखते हैं इसलिए जन्म-मृत्यु की पहेली तो मन में फिर भी बनी ही रहती है। वास्तविकता यह है कि आत्मा तो अजर व अमर ही है मगर जन्म और मृत्यु हमारे 'शरीर' की होती है। आत्मा के संयोग से शरीर का 'जन्म' और वियोग से शरीर की 'मृत्यु' होती है। इस प्रकार शरीर का ही निर्माण होता है और नाश भी शरीर का ही होता है। हम कह सकते हैं कि जिसमें अर्थात् जिस व्यवस्था में किसी शरीर के साथ संयुक्त हो के जीव कर्म करने में समर्थ होता है, उसे 'जन्म' कहते हैं और 'जिस शरीर को प्राप्त होकर जीव क्रिया करता है उसे शरीर और जीव का किसी काल में जो वियोग हो जाना है, उसको 'मरण' कहते हैं।'

वेदादि सत्यशास्त्रों में पुनर्जन्म की बात को बताया गया है, अतः इस व्यवस्था को न मानने वाले नास्तिक कहे जाएँगे। क्योंकि मनु जी ने कहा है- नास्तिको वेदनिन्दकः अर्थात् वेद को न मानने वाले नास्तिक हैं। पाणिनि के अनुसार- 'जिस विषय में किसी व्यक्ति का विचार उस विषय को स्वीकार करने में है तो उस विषय की दृष्टि से वह आस्तिक कहा जाएगा।' यदि व्यक्ति का विचार विषय को अस्वीकार करने में है तो उस विषय की दृष्टि से वह नास्तिक होगा। उनका कथन है-

अस्ति मतिरस्य आस्तिकः। नास्ति मतिरस्य नास्तिकः।।
न च मतिसत्तामात्रे प्रत्यय इष्यते,
किं तर्हि परलोकोऽस्तीति यस्य मतिरस्ति स आस्तिकः।
तद्विपरीतो नास्तिकः।।

इस प्रकार शास्त्रकारों की व्यवस्थानुसार जो परलोक अर्थात् पुनर्जन्म को स्वीकार करता है, वह आस्तिक तथा जो ऐसा नहीं मानता वह नास्तिक है। इस अर्थ को ऐसे भी कहा जा सकता है-जो आत्मा को देह आदि के अतिरिक्त मानकर नित्य सदा विद्यमान रहने वाला स्वीकार करता है वह आस्तिक तथा जो ऐसा नहीं मानता, वह नास्तिक है। अब विचारणीय यह है कि जब आत्मा का देह से अतिरिक्त अलग अस्तित्व है तो देह के छूट जाने के बाद उस आत्मा का क्या होता है? अन्ततः यही बात स्वीकार करनी होगी कि जन्म भी शरीर का होता है और मृत्यु भी शरीर की ही होती है। अतः आत्मा अपने कर्मों के अनुसार अनेक

गतियों (योनियों=various classes of birth and rebirth) को प्राप्त होता रहता है तथा इसे ही आवागमन या पुनर्जन्म कहा जाता है। यहाँ यह बात भी मनन करने योग्य है कि पुनर्जन्म आत्मा का नहीं होता बल्कि आत्मा को कर्मानुसार मानवदेह या अन्य-अन्य शरीर मिलते रहते हैं...

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी आत्मा को 'अमर' ही माना जा सकता है क्योंकि वैज्ञानिकों द्वारा 'ऊर्जा-संरक्षण-सिद्धान्त' (The Theory of Conservation of Energy) के आधार पर इस बात को सिद्ध किया जा चुका है कि किसी भी वस्तु का कभी नाश नहीं होता है बल्कि वह अपना स्वरूप बदलती है- कपड़ा भले ही घिस-घिसकर धूल बन जायेगा मगर पदार्थ उतने का उतना ही रहेगा, वह नष्ट नहीं होगा। यदि वैज्ञानिक, भौतिक जगत् में इस सिद्धान्त को सत्य मानते हैं तो आध्यात्मिक-जगत में भी इस सिद्धान्त को सत्य मानना पड़ेगा और इस सिद्धान्त के अनुसार आत्मा उत्पन्न नहीं होता और वर्तमान में उसकी सत्ता है तो आगे यह अपना रूप ही बदल सकता है, कभी नष्ट नहीं हो सकता। आत्मा का शरीर से अलग अस्तित्व है तथा शरीर के पैदा होने से पूर्व और मरने के बाद भी इसका अस्तित्व बना रहता है। अत: इस बात को स्वीकार करना ही पड़ेगा कि यह कहीं से आता है और कहीं को चला जाता है। इसे इसका रूप बदलना कहा जा सकता है और यही पुनर्जन्म है। पुनर्जन्म के पक्ष में अनेक हेतु हैं जैसे आत्मा नित्य है इसलिए उसका नाश नहीं हो सकता। वेद, उपनिषद्, मनुस्मृति, दर्शन, गीता आदि ग्रन्थ इसी बात का अनुमोदन करते हैं। कर्मफल-व्यवस्था (the system of delivery or result of one's actions/deeds) के आधार पर भी पुनर्जन्म सिद्ध होता है। परमात्मा की न्याय-व्यवस्था और शक्तिमत्ता से भी पुनर्जन्म की ही पुष्टि होती है। जीव के सामर्थ्य=competence- भेद से भी यही बात सिद्ध होती है। यहाँ हम कहना चाहते हैं कि जीव की क्रमिक उन्नति (gradual or successive progress) का आधार भी पुनर्जन्म ही है।

यदि हम पुनर्जन्म के सिद्धान्त को हटा दें तो जीव के क्रमिक विकास की कल्पना तक नहीं की जा सकेगी। वास्तव में ईश्वरीय व्यवस्था में अच्छे और बुरे कर्मों का फल जीव के अपने ही क्रमिक विकास के लिए दिया जाता है। आवागमन के इस चक्र में ही जीवन का विकास होने की संभावना बनी रहती है। यदि केवल एक ही जन्म मान लिया जाए तो परमात्मा भी न्यायकारी नहीं रहेगा, क्योंकि हर व्यक्ति को सुधरने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए तथा व्यक्ति को भी असफल होने पर पुनः सफल होने का प्रयास करना चाहिए। आवागमन में परमात्मा ने यही व्यवस्था कर रखी है। नीच से नीच व्यक्ति को भी निरन्तर सुधरने का अवसर मिलता रहता है। अर्जुन को जब श्रीकृष्ण योग-ध्यान की बातें बताते हैं तो उसके मन में एक शंका पैदा हो जाती है जिसे उसने श्रीकृष्ण के सामने रखा कि यदि मुझे इस जन्म में पूर्णरूप में योग की सिद्धि न मिली और बीच में ही प्राणान्त हो गया तो मेरे उस किए गए प्रयास का क्या लाभ होगा? भगवान् श्रीकृष्ण ने इसका बहुत ही सार्थक उत्तर देते हुए कहा कि जीवात्मा पर जो अच्छे व बुरे संस्कार पड़ जाते हैं वे कभी भी नष्ट नहीं होते हैं। व्यक्ति को उसका फल अवश्य मिलता है। वे अर्जुन को आश्वस्त करते हैं-

प्राप्यपुण्यकृतां लोकान् उषित्वा शाश्वतीः समाः।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते।।
अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम्।
एतद् हि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम्।।
तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम्।
यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन।।
पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः।
जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते।।

भगवद्गीता ६.४१ से ४४।।

जिस स्थान को पुण्यशील लोग पाते हैं उसे पाकर, वहाँ बहुत समय तक रहने के उपरान्त योगभ्रष्ट व्यक्ति पवित्र और श्रीमान् लोगों के घर में जन्म लेता है, अथवा बुद्धिमान् योगियों के कुल में जन्म लेता है। श्रीमान् लोगों के स्थान में योगियों के कुल में ही जन्म लेता है वह तो इस संसार में और भी दुर्लभ है। हे कुरुनन्दन! वहाँ वह पूर्वजन्म के 'बुद्धि-संयोग' को (संस्कारों को) फिर पा जाता है

और (जहाँ से पहले छोड़ा था) वहाँ से फिर संसिद्धि (मोक्ष) पाने के लिए यत्न करता है। वह अपने पिछले जन्म के अभ्यास के द्वारा विवश सा होकर योग की ओर खिंचता है क्योंकि योग का जिज्ञासु तक भी सकाम विधि-विधान करने वाले से, शब्द-ब्रह्म तक सीमित रह जाने वाले से, ब्रह्म की मात्र शाब्दिक चर्चा करने वाले से आगे निकल जाता है।

इस बात को ऐसे समझा जा सकता है कि हम किसी स्थान के लिए प्रस्थान करते हैं मगर कुछ ही दूर जाने के बाद रात हो जाती है और हमें रुककर वहीं विश्राम करना पड़ता है। अब प्रातःकाल हमारी यात्रा उस स्थान से आगे आरम्भ होगी जहाँ हमने रात्रि को विश्राम किया था, न कि वहाँ से जहाँ से हमने यात्रा आरम्भ की थी। वहाँ तक का मार्ग तो हमने तय कर लिया है। इस प्रकार आवागमन का सिद्धान्त व्यक्ति की क्रमिक उन्नति (gradual or successive progress) का आधार है। आवागमन के सिद्धान्त को मानने से व्यक्ति के भीतर एक आशावादी विचारधारा पैदा होती है। यदि हमारी समूची व्यवस्था से कर्मफल सिद्धान्त को निकाल दिया जाए तो व्यक्ति पापों की ओर अधिक झुकेगा, उसके भीतर स्वेच्छाचारिता के भाव पैदा होंगे और वह प्रत्येक कार्य में मनमानी पर उतर आएगा। किसी भी समाज, राष्ट्र या परिवार में जहाँ किसी बड़े का भय समाप्त हो जाता है, वहाँ पर उत्पात ही पैदा होता है। जब किसी के मन में यह विश्वास ही नहीं होगा कि उसे अच्छे कार्यों के लिए पुरस्कृत और बुरे कार्यों के लिए दण्डित किया जायेगा तो व्यक्ति अच्छे कार्य करेगा क्यों?

महात्मा नारायण स्वामी जी इस सम्बन्ध में लिखते (कर्म रहस्य) हैं-'यह प्रसिद्ध बात है जिसे प्रायः सभी जानते हैं कि मनुष्य-योनि कर्म करने और फल भोगने दोनों की योनि है, परन्तु अन्य पशु, पक्षी आदि की योनियाँ केवल फल भोगने के लिए हैं। इन भोग वाली योनियों में जाने ही से मनुष्य का सुधार हुआ करता है। मनुष्य की जितनी भी इन्द्रियाँ हैं, सदुपयोग करने के वास्ते मिली हैं। एक उदाहरण से यह बात साफ हो जाएगी। मनुष्य को आँखें देते हुए सृष्टि-रचयिता परमात्मा ने यह शिक्षा दी है कि इनसे सभी को मित्र की दृष्टि से देखो, किसी के लिए भी देखते हुए तुम्हारे हृदय में ईर्ष्या-द्वेष की भावना न हो। एक मनुष्य इस शिक्षा पर आचरण नहीं करता, सदैव या अक्सर आँखों का दुरुपयोग करता है, समझाना-बुझाना उसके लिए सब बेकार है। अब बताओ उसका सुधार किस प्रकार हो? उसके सुधार का अब इसके सिवा कोई तरीका नहीं रहा कि उस व्यक्ति को आँख से काम लेने से ही रोक दिया जाए। आवागमन से ज्ञान यही होता है कि वह यदि मनुष्य योनि में पैदा होगा तो अंधा पैदा होगा, यदि और भी कर्म उसके दूषित हैं तो फिर किसी ऐसी योनि में पैदा होगा जो चक्षुरहित है। किसी कर्म को करने से करने का, और न करने से न करने का, अभ्यास हुआ करता है-इसे सभी जानते हैं। इसलिए उस प्राणी की आँख का काम बन्द हो जाने से आँखों को जो ईर्ष्या-द्वेष से देखने का अभ्यास था आदत या practice हो गयी थी वह जाती रही और वह व्यक्ति सुधरी हुई आँखों के साथ एक मनुष्य योनि में पैदा हो जाता है।'

यह तो उन्होंने एक उदाहरण दिया है इसी बात को हम अन्य योनियों आदि के रूप में भी समझ सकते हैं तथा इसी प्रकार जीव-धीरे-धीरे क्रमिक विकास (successive progress) करता हुआ मोक्ष प्राप्ति तक पहुँच सकता है। शास्त्रों के अनुसार ईश्वरीय व्यवस्था में जीव को संसार में भोग और अपवर्ग के लिए भेजा जाता है। अपने कर्मानुसार ही व्यक्ति भोग को भोगता हुआ या अपने पूर्वकृत कर्मों को भोगता हुआ भी निरन्तर मुक्ति के उपाय करता रहे क्योंकि बार-बार के जन्म-मरण के चक्कर से बचने का केवल यही एक उपाय है। आत्मा को तृप्ति भी वहीं पर मिल सकती है अन्यथा वह तृप्ति की तलाश में भटकता ही रहेगा। ('वेदवाणी' मासिक, अक्टूबर २०१४ अंक से साभार।)

विशेष- (क) अब से कोई ४६ वर्ष पूर्व गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या के आचार्य वैदिक मिशनरी पं. विद्यानन्द शर्मा (मन्तकी) शास्त्रार्थ-महारथी ने 'आवागमन' विषय को प्रस्तुत एवं पुष्ट करने वाले कई अकाट्य प्रमाण दिये थे उनमें से दो सरल सुग्राह्य दृष्टान्तों को यहाँ उद्धृत करना समीचीन होगा-

१. विद्यालय, महाविद्यालय (स्कूल, कॉलेज) आदि में विद्यार्थी श्रेणीवार बिठाए जाते हैं-योग्यता के अनुसार ये श्रेणियाँ बनाई जाती हैं। वहाँ प्रबन्धन होता है अराजकता नहीं चल सकती। ठीक ऐसे ही संसार का अधिपति=परब्रह्म परमात्मा, अस्मदादिकों (हम सब के) के कर्मों का याथातथ्य (in sense of exactness or intactness)= ठीक-ठीक सन्तुलन करके बाहर-भीतर के कर्मफल भोग के लिये जन्म देता रहता है। जिस प्रकार पाठशाला में विद्यार्थी श्रमानुसार, योग्यतानुसार श्रेणीवार ऊपर चढ़ाये जाते हैं-आलसी छात्र नम्बर न लाने से फेल होकर उसी श्रेणी में पड़ा रहता है-विशेष नियमों का उल्लंघन करने पर स्कूल कॉलिज आदि से निकाल भी दिया जाता है, तब वह किसी स्कूल कॉलिज में दाखिला नहीं पा सकता-इसी प्रकार से **कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः**=कर्मों के अध्यक्ष अन्तर्यामी परमेश्वर की सटीक व्यवस्था (under the Altmighty's apt and befitting system) मनुष्य-योनि से गिर जाने वाले कर्म करने पर जीव को पशु-पक्षी-कीट पतंगादि योनियों में कृत कर्मों के फल-भोग हेतु एवं सुधार हेतु भेज दिया जाता है।

२. धोबी के घर पर कपड़ा धुल कर साफ होता है पुनः लौटकर घर आ जाता है। इसी प्रकार परमात्मा हम जीवों को मनुष्येतर योनियों (नीची योनियों) में भेजकर दुष्ट कर्मों के दागों को भोग द्वारा साफ कराकर हमें पुनः मनुष्य शरीर में आने योग्य बना देता है और तभी उस जगदीश्वर की अनुपम कृपा से हमें मानव देह प्राप्त होता है।

(ख)- धर्मशास्त्रों में आत्मा शब्द प्रसंगानुसार जीव या ईश्वर दोनों के लिये प्रयुक्त हुआ है। यहाँ 'आत्मा' शब्द हम जीवों के लिए प्रयुक्त है।

(ग)- इस अनुपम लेख को कुछ परिवर्धित रूप में प्रस्तुत करने में इस बात का पूरा ध्यान रखा है कि विद्वान् लेखकों के लेखों का मूल स्वरूप यथावत बना रहे। साथ ही मैंने आज के युवकों को समझने की सुविधा हेतु कुछ कठिन शब्दों को अंग्रेजी में भी अभिव्यक्त कर दिया है।

प्रस्तुतकर्त्ता- चान्दरतन दम्माणी, कोलकाता

लेखकों से निवेदन

- लेखक कृपया अपने मौलिक व अप्रकाशित लेख ही भेजें।
- लेखक अपना पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या लेख के साथ अवश्य लिखें।
- परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।
- अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटायी नहीं जाती हैं।
- रचना के प्रकाशन में छः माह या अधिक समय भी लग सकता है, अतः कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।
- स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। **-संपादक**

महत्त्वपूर्ण सूचना

योग–साधना एवं स्वाध्याय शिविर की तिथियों में परिवर्तन किया गया है। अब यह शिविर १५ से २२ सितम्बर २०१९ को आयोजित होगा।

जब तक सबकी रक्षा करने वाला धार्मिक राजा वा आप्त विद्वान् न हो तब तक विद्या और मोक्ष के साधनों को निर्विघ्नता से पाने के योग्य कोई भी मनुष्य नहीं होता है और न मोक्ष सुख से अधिक कोई सुख है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५२

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग—साधना एवं स्वाध्याय शिविर

परिवर्तित दिनांक : १५ से २२ सितम्बर २०१९

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे- समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखने आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा- खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

१०. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ- परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) कार्यालय से (०१४५-२४६०१६४) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं, शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं

शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने-पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अज़मेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। पृथक् कक्ष का शुल्क १००० रु. अतिरिक्त देय है। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (०१४५-२६२१२७०) में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

email:psabhaa@gmail.com

संयोजक

एक आहुति अपने आचार्य के लिए........

ऋषि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा की तन, मन, धन से सेवा करने वाले, उसे अपनी मातृवत् समझने वाले और यहाँ तक कि अपना जीवन समर्पित कर देने वाले डॉ. धर्मवीर आज अपना समस्त भार आर्य जनता अर्थात् अपने उत्तराधिकारियों पर छोड़ गये हैं। उन्होंने ऋषि के स्वप्नों को अपना कर्त्तव्य समझकर सभा को गगनचुंबी ऊँचाइयों तक पहुँचाया। अनेक नये प्रकल्प चलाये यथा-वैदिक गुरुकुल, गोशाला, आश्रम, अतिथियों के ठहरने व खान-पान की निःशुल्क व्यवस्था आदि। उन्होंने जो-जो कार्य छेड़े उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति में कभी न्यूनता न आने दी। परोपकारिणी सभा ऐसे पुत्र को प्राप्त कर गौरव का अनुभव करती है और बिछुड़कर शोकग्रस्त होने का भी। उनके द्वारा शुरु किये कार्य कभी शिथिल न पड़ें, इस कारण **सभा ने डॉ. धर्मवीर जी की स्मृति में एक करोड़ रु. की स्थिर निधि बनाने का संकल्प लिया है,** जिससे कि धन धर्म के काम आ सके। इसमें सन्देह नहीं कि ये समस्त कार्य आर्य जनता के सहयोग से ही प्रारम्भ हो सके हैं और सहयोग से ही चल भी रहे हैं। इसलिये इसमें भी सन्देह नहीं कि सभा के इस संकल्प को आर्य जनता शीघ्र पूर्णता की ओर पहुँचा देगी और शायद उससे भी कहीं बढ़कर। यज्ञ तो हवि माँगता है। बिना हवि के यज्ञ की कल्पना भी क्या? बस देरी तो सूचित होने की है। हवि बनना तो आर्यों के खून में है, तन से, मन से अथवा धन से।

आप अपना दान चैक, ड्राफ्ट या सभा के खाते में सीधे भी भेज सकते हैं। कृपया, राशि भेजने के पश्चात् सभा में दूरभाष या पत्र द्वारा अवश्य सूचित कर दें।

कन्हैयालाल आर्य - मन्त्री

संस्था की ओर से....

क्या आप प्रतिदिन अतिथि यज्ञ नहीं कर पाते?

तो आइये, अतिथि यज्ञ के होता बनिये

वैदिक नित्यकर्मों में अतिथि यज्ञ प्रतिदिन करना अनिवार्य है, किन्तु आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं, फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय? इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाखे जलाकर व्यय करते हैं, असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें, इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन प्रतिवर्ष ५ हजार एक सौ रु. की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशित भी किय जात हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उन्हें उनके जन्मदिवस आदि पर परोपकारिणी सभा की ओर से दूरभाष द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया जायेगा। यदि उस शुभ अवसर पर वे स्वयं उपस्थित होकर यजमान बनें तो यह सर्वोत्तम होगा।

अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि-यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगाँठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नकद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

परोपकारिणी सभा की गतिविधियाँ

परोपकारिणी सभा महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित उनकी उत्तराधिकारिणी सभा है और केवल नाम से ही नहीं, बल्कि अपने कार्यों से भी वह ऋषि के उत्तराधिकार के दायित्व को पूर्णतया निभा रही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती

ने इस सभा की स्थापना के समय तीन उद्देश्य रखे थे।

१. वेदादि सत्यशास्त्रों का प्रकाशन २. विद्वान् उपदेशक तैयार करके देश-विदेश में वैदिक धर्म का प्रचार एवं ३. आर्यावर्त्तीय दीन-दरिद्रों की सेवा।

इन सभी कार्यों को सभा अपने विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से पूरा करने में सर्वसामर्थ्य से लगी हुई है। यद्यपि सभा के पास आर्थिक आय का कोई स्थाई माध्यम नहीं है, पुनरपि ऋषिभक्तों एवं आर्यजनों के सहयोग और विश्वास पर ही सभा ने बड़े-बड़े कार्यों को प्रारम्भ किया और निरन्तर कर भी रही है। आचार्य डॉ. धर्मवीर जी, जो कि वर्तमान में परोपकारिणी सभा के प्रधान एवं मूल स्तम्भ थे, उनका कहना था कि **''कार्य यदि अच्छा है तो उसे प्रारम्भ कर देना चाहिये, सहयोग तो स्वयं ही मिल जाता है।''** यही शैली अपनाकर आज भी वैदिक विचार के प्रचार का कार्य निरन्तर जारी है। डॉ. धर्मवीर जी के जाने से सभा को बड़ा आघात अवश्य लगा है, परन्तु आर्यों का स्नेह, भरोसा उनके द्वारा प्रारम्भ किये गये कार्यों को रुकने नहीं देगा-ऐसा सभा को पूर्ण विश्वास है।

परोपकारिणी सभा आज अनेक कार्यों, माध्यमों से इस वेद प्रचार यज्ञ में लगी है, जिसकी सूची यहाँ दी जा रही है-

भव्य ऋषि उद्यान आश्रम, अतिथि यज्ञ, भोजनशाला, गौशाला, वानप्रस्थ एवं संन्यासाश्रम, गुरुकुल, परोपकारी पत्रिका, प्रकाशन, योग साधना एवं चरित्र निर्माण शिविर, सत्यार्थ प्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र का निःशुल्क वितरण, पाण्डुलिपियों का डिजिटलाइजेशन, पुस्तकालय, औषधालय, देश-देशान्तरों में वेद-प्रचार, आयुर्वेदिक औषधालय।

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में वर्ष २०१२ से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

परोपकारिणी सभा में आयुर्वेदिक चिकित्सक की आवश्यकता

सभा द्वारा संचालित आयुर्वेदिक चिकित्सालय के लिये योग्य आयुर्वेदिक चिकित्सक की आवश्यकता है। चिकित्सालय में सेवा देने का समय प्रतिदिन २ घण्टे है। आवास, भोजन आदि की व्यवस्था सभी की ओर से ही होगी।

सम्पर्क- ०१४५-२६२१२७०, ९४६०४२११८३

परोपकारिणी सभा के प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत ख़ाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091 email : psabhaa@gmail.com

दानदाताओं की सूची

अतिथि यज्ञ के होता

(०१ से ३१ जुलाई २०१९ तक)

१. श्री राजेन्द्र सिंह, नई दिल्ली २. मै. स्वस्तिकॉम चेरिटेबिल ट्रस्ट, अमरावती ३. श्री रामजीवन एवं श्रीमती द्रौपदी देवी मिश्रा, जयपुर ४. श्रीमती बीना त्यागी, नई दिल्ली ५. श्री राजेश त्यागी, अजमेर ६. श्रीमती कुमुदिनी आर्य व श्री वासुदेव आर्य, अजमेर ७. श्री नेमी वर्मा, अजमेर ८. स्वामी विष्णु चैतन्य, उत्तरकाशी ९. श्री प्रकाश चतुर्वेदी, मुंबई १०. श्री अजय, श्री विजय व श्रीमती राजबाला ११. श्री कुन्तल शाह, अहमदाबाद।

गोभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गोशाला संचालित है। गोशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि-उद्यान में संचालित गोशाला के दानदाता

(०१ से ३१ जुलाई २०१९ तक)

१. श्री माणिक चन्द जैन, छोटी खाटु २. श्री हरसहाय सिंह आर्य (गंगवार), बरेली ३. श्री विजय कुमार एडवोकेट, नई दिल्ली, ४. श्री उदयचन्द पटेल, बंगलोर ५. श्री दीपक शर्मा, अजमेर ६. श्री ब्रजकिशोर व श्रीमती उर्मिला मंगल, अजमेर ७. श्रीमती उर्मिला अवस्थी, जोधपुर ८. श्री के.पी. सिंह, नई दिल्ली ९. श्री विद्याधर चाँदनानी, कच्छ १०. श्री तेजस्वी आहुजा, गुरुग्राम ११. श्री ऋषभ गुप्ता, अम्बाला कैन्ट।

विद्याभास्कर प्रा. नरदेव जी गुडे का दुःखद निधन

लातूर महाराष्ट्र- महाराष्ट्र में हिन्दी भाषा और आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में कार्यरत प्रा. नरदेवजी गुडे का दिनांक २५ जुलाई को ७४ वर्ष की आयु में असामयिक निधन हो गया। श्री गुडे जी लातूर जिले के कव्हा गाँव के रहने वाले थे तथा लातूर के प्रसिद्ध छः राजर्षि शाहू महाविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक थे। आपने हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। प्रा. नरदेव गुडे महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री पद पर भी रहे हैं। आप परोपकारिणी सभा के भूतपूर्व प्रधान स्व. डॉ. धर्मवीर, स्व. पं. कुशलदेव शास्त्री, डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे एवं पं. विरजानन्द दैवकरणि के सहपाठी रहे। दिनांक २६ जुलाई २०१९ को उनका वैदिक पद्धति से अन्तिम संस्कार किया गया। आपके असामयिक निधन से हिन्दी भाषा और आर्यसमाज की हानि हुई है। परोपकारिणी सभा दिवंगतात्मा को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करती है कि शोक संतप्त परिवार को धैर्य व साहस प्रदान करे।

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३६ वाँ ऋषि बलिदान समारोह
दिनांक १, २, ३ नवम्बर २०१९, शुक्र, शनि, रविवार

विराट् व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३६वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ- 'यजुर्वेद पारायण यज्ञ' की पूर्णाहुति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन ३ नवम्बर को प्रात: १० बजे होगी। यज्ञ के ब्रह्मा आर्यजगत् के प्रतिष्ठित विद्वान् डॉ. विनय विद्यालंकार-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड होंगे।

वेदगोष्ठी – प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है- **वेद वर्णित ईश्वर-स्वरूप एवं नाम (ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव)**। जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे १० अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। १, २, ३ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण प्रतियोगिता- प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गत वर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। २ नवम्बर को परीक्षा एवं ३ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १० अक्टूबर, २०१९ तक आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर के पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान -समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

नवम्बर के आरम्भ में अजमेर में हल्की ठंड होने लगती हैं, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें। सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तदनुसार व्यवस्था की जा सके। सभी से निवेदन है कि १३६वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकर्त्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान् एवं विशिष्ट अतिथि- स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती-मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र., प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु-अबोहर, श्री सुरेश अग्रवाल-प्रधान सार्वदेशिक सभा, प्रो. सुरेन्द्र कुमार-पूर्व कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, श्री तपेन्द्र वेदालंकार-(रि. आई.ए.एस.) जयपुर, आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश, आचार्य विरजानन्द दैवकरणि-झज्जर, श्री दीनदयाल गुप्त-कोलकाता, श्री शत्रुघ्न आर्य-राँची, श्री सत्यानन्द आर्य-दिल्ली, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार-कुरुक्षेत्र, प्रो. महावीर अग्रवाल-पूर्व कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रो. कमलेश चौकसी-अहमदाबाद, डॉ. रामप्रकाश वर्णी-एटा, डॉ. ब्रह्ममुनि-महाराष्ट्र, श्री जगदीश शर्मा-जयपुर, श्री शिवकुमार चौधरी-इन्दौर, श्री जयदेव आर्य-राजकोट, श्री ठा. विक्रमसिंह-दिल्ली, श्री प्रियव्रतदास एवं श्रीमती शन्नो देवी-भुवनेश्वर, आचार्य विजयपाल-झज्जर, श्री सज्जनसिंह कोठारी-पूर्व लोकायुक्त जयपुर, श्री विजयसिंह भाटी-जोधपुर, श्री इन्द्रजित् देव-यमुनानगर, आचार्य विद्यादेव; आचार्य घनश्यामसिंह, डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री- रायबरेली, डॉ. रघुवीर वेदालंकार-दिल्ली, स्वामी ऋतस्पति-होशंगाबाद, आचार्या सूर्या देवी-शिवगंज, आचार्या धारणा 'याज्ञिकी', आचार्य ओमप्रकाश-आबूपर्वत, मा. रामपाल आर्य-प्रधान आ.प्र.स. हरियाणा, डॉ. महावीर मीमांसक-दिल्ली, श्री विजय शर्मा- भीलवाड़ा, डॉ. जगदेव-रोहतक, पं. रामनिवास गुणग्राहक-श्रीगंगानगर, डॉ. कृष्णपाल सिंह-जयपुर, डॉ. मुमुक्षु आर्य-नोएडा, पं. सत्यपाल पथिक, पं. भूपेन्द्र सिंह आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

डॉ. वेदपाल
प्रधान

कन्हैयालाल आर्य
मन्त्री

ओ३म्

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर (राज.) पिन. ३०५००१ दूरभाष– ०१४५–२४६०१६४

वेदगोष्ठी–२०१९

विषय– वेद वर्णित ईश्वर–स्वरूप एवं नाम (ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव)

मान्यवर सादर नमस्ते।

आशा करता हूँ कि आप स्वस्थ सानन्द होंगे। आपको सुविदित है कि सद्भावी विद्वानों के सहयोग से सदा की भांति इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ, दिल्ली तथा अनुसंधान विभाग परोपकारिणी सभा, अजमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में ऋषि मेले के अवसर पर वेदगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस गोष्ठी में देश के अनेक भागों से पधारे प्रख्यात वैदिक विद्वान् निर्धारित विषयों पर अपने शोधपूर्ण विचार प्रस्तुत करते हैं। इनमें से चुने हुए शोध–पत्र परोपकारी व वेदपीठ की शोध–पत्रिका के माध्यम से प्रकाशित किये जाते हैं। जिससे जो लोग गोष्ठी में नहीं आ सकते वे भी लाभान्वित होते हैं। विद्वानों को भी इस विषय पर अधिक विचार करने का अवसर मिलता है। गत ३१ वर्षों से गोष्ठी का आयोजन निरन्तर किया जा रहा है। अब तक निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार किया जा चुका है:–

१. ऋषि दयानन्द की वेदभाष्य शैली।	१२ नवम्बर, १९८८
२. वेद और कर्मकाण्डीय विनियोग।	०५ नवम्बर, १९८९
३. अथर्ववेद समस्या और समाधान।	२७ नवम्बर, १९९०
४. वेद और विदेशी विद्वान्।	१६ नवम्बर, १९९१
५. वैदिक आख्यानों का वास्तविक स्वरूप।	०१ नवम्बर, १९९२
६. वेदों के दार्शनिक विचार।	२८ नवम्बर, १९९३
७. सोम का वैदिक स्वरूप।	१२ नवम्बर, १९९४
८. पर्यावरण समस्या का वैदिक समाधान।	०३ नवम्बर, १९९५
९. वैदिक समाज व्यवस्था।	०१ नवम्बर, १९९६
१०. वेद और राष्ट्र।	२४ अक्टूबर, १९९७
११. वेद और विज्ञान।	०९ अक्टूबर, १९९८
१२. वेद और ज्योतिष।	१० नवम्बर, १९९९
१३. वेद और पदार्थ विज्ञान	०३ नवम्बर, २०००
१४. वेद और निरुक्त	१८ नवम्बर २००१
१५. वेद में इतिहास नहीं	०१ नवम्बर २००२
१६. वेद में कृषि व वनस्पति विज्ञान	३१ अक्टूबर २००३
१७. वेद में शिल्प	१९ नवम्बर २००४
१८. वेदों में अध्यात्म	११ नवम्बर, २००५
१९. वेदों में राजनीतिक चिन्तन	२७ नवम्बर, २००६
२०. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है	१६ नवम्बर, २००७
२१. वैदिक समाज विज्ञान	०५ नवम्बर, २००८
२२. सत्यार्थप्रकाश का ७ वाँ समुल्लास व वेद	२३ अक्टूबर, २००९
२३. सत्यार्थप्रकाश का ८ वाँ समुल्लास व वेद	१२ नवम्बर, २०१०
२४. सत्यार्थप्रकाश का ९ वाँ समुल्लास व वेद	०४ नवम्बर, २०११
२५. महर्षिदयानन्दाभिमत मन्तव्यः वैदिक परिप्रेक्ष्य	१६ नवम्बर, २०१२
२६. वेद और सत्यार्थप्रकाश का १२वाँ समुल्लास	८ नवम्बर, २०१३
२७. भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद	३१ अक्टू. १,२ नव., २०१४
२८. भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद	२०,२१,२२ नव., २०१५
२९. दयानन्द दर्शन की वेदमूलकता	४,५,६ नव., २०१६
३०. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त	२७,२८,२९ अक्टू., २०१७
३१. षड्दर्शनों की वेदमूलकता और महर्षि दयानन्द	१६,१७,१८ नवम्बर., २०१८

आर्यजगत् के समाचार

१. अध्यापकों की आवश्यकता- आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबूपर्वत (सम्बद्ध महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, हरियाणा) में संस्कृत-साहित्य, हिन्दी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, गणित आदि विषयों के अध्यापन हेतु अध्यापकों की आवश्यकता है। कृपया सेवानिवृत्त अध्यापक महानुभाव ही सम्पर्क करें। आवास, भोजन, गोदुग्ध की निःशुल्क व्यवस्था के साथ-साथ समुचित मानदेय भी दिया जायेगा। **सम्पर्क सूत्र- ८७६४२१८८८१, ९४१४५८९५१०**

२. प्रवेश सूचना- आर्ष विद्यालय श्री गुरुकुल चित्तौडगढ़ में शिक्षा २०१९-२० हेतु कक्षा १ से ८ में ७ से १४ साल की आयु के बच्चों के प्रवेश आरम्भ हो चुके हैं। प्राचीन गुरुकुल आश्रम पद्धति में रहते हुए पवित्र व सदाचारयुक्त प्राचीन एवं अर्वाचीन शिक्षा के साथ न्यूनतम शुल्क व सात्त्विक नाश्ता व दोनों समय भोजन की उत्तम व्यवस्था है। निराश्रित बालकों की शिक्षा व पालन-पोषण की निःशुल्क व्यवस्था है। विस्तृत जानकारी के लिये सम्पर्क करें- श्री चन्द्रदेव आचार्य, श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़, राज.- दूरभाष ०९४१४१०९१२६

३. प्रशिक्षण शिविर- आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के तत्त्वावधान में २२ जून ३० जून २०१९ तक दो दिन का लघु गुरुकुल श्री दीपक फूल तथा सुरेश अग्रवाल के आशीर्वाद से सम्पन्न हुआ तथा २४ जून ३० जून २०१९ तक पं. ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति की स्मृति में आर्य पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन आर्यसमाज कलकत्ता, १९ विधान सरणी कलकत्ता-६ में बड़े ही उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। शिविर में प्राणायाम शिक्षा, विशुद्ध मन्त्रोच्चारण शिक्षा और आर्यसमाज के सिद्धान्तों का ज्ञान सुयोग्य विद्वानों- पं. सतीश चन्द्र मण्डल, पं. वेदप्रकाश शास्त्री, पं. मधुसूदन शास्त्री, पं. अपूर्वदेव शर्मा, आचार्य ब्रह्मदत्तार्य तथा पंडिता अर्चना शास्त्री, द्वारा प्रदान किये गए। शिविर में महर्षि दयानन्द गुरुकुल मालिग्राम, पश्चिम मेदिनीपुर के ब्रह्मचारी सहित ७० लोगों ने भाग लिया।

४. यज्ञ सम्पन्न- १ जुलाई २०१९ सोमवार को ऋषि उद्यान में प्रातःकालीन दैनिक यज्ञ के साथ ही राष्ट्रभृत यज्ञ का आयोजन आचार्य विद्यादेव जी के ब्रह्मतत्व में किया गया। यज्ञ में चारों वेदों में से चुने हुये राष्ट्र सम्बन्धित वेद-मन्त्रों से आहुतियाँ दी गईं। यज्ञ के मुख्य यजमान श्री बलेश्वर मुनि (दम्पती) रहे।

५. श्री राम कथा- मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम कथा का २९ जून से ०५ जुलाई २०१९ तक कन्जोली लाइन, भरतपुर में कथा-वाचिका आचार्य डॉ. अर्चनाप्रिय आर्य द्वारा वाचन हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्यप्रिय जी रहे। कार्यक्रम आयोजक पदम सिंह सैनी थे। भजनोपदेशक श्री नरदेव आर्य व नरदेव बेनीवाल भी थे। मन्त्री सत्यदेव आर्य ने बतलाया कि यह रामकथा जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा भरतपुर के तत्त्वावधान में ही हुई।

६. आर्य अभिनन्दन समारोह-२०१९- १. वैदिक वाङ्मय पर विशिष्ट कार्य कर चुके विद्वान् एवं विदुषियाँ २. राष्ट्रपति अथवा किसी सरकार द्वारा सम्मानित आर्य विद्वान् एवं विदुषियाँ ३. आर्य वीरदल एवं वीरांगना दल को शिक्षित करने वाले शिक्षक-शिक्षिकाएँ।

उक्त पूर्ण विवरण चित्र सहित भेजें- सितम्बर मास में दिल्ली में सम्मान समारोह सम्पन्न होगा। अपना पूर्ण परिचय निम्न पते पर शीघ्रातिशीघ्र भेजने की कृपा करें। ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट, ए-४१, द्वितीय फ्लोर, लाजपत नगर-द्वितीय, (निकट-मेट्रो स्टेशन) नई दिल्ली-११००२४, दूरभाष-०११-२९८४२५२७, ९५९९१०७२०७

७. यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न- श्री गुरु विरजानन्द आर्ष गुरुकुल वेद मन्दिर, मथुरा के वार्षिक उत्सव पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ दि. १४ से १६ जुलाई २०१९ को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर नवीन ब्रह्मचारियों के प्रवेश के अवसर पर उपनयन संस्कार का भव्य आयोजन हुआ।

८. यज्ञ का आयोजन- महर्षि दयानन्द सरस्वती वेद प्रचार समिति कोटा के तत्त्वावधान में २३ जून से ३० जून २०१९ तक आठ दिवसीय वेद कथा, धार्मिक सत्संग एवं ११ कुण्डीय महायज्ञ का आयोजन किया गया। उक्त सत्संग कार्यक्रमों में भजनोपदेशक पं. उदयवीर शास्त्री, मथुरा, उ.प्र. एवं वैदिक विद्वान् डॉ. रामनारायण शास्त्री, सुरभि आर्य मथुरा ने अपने सुमधुर भजनों एवं वेद कथा के माध्यम से वैदिक धर्म-संस्कृति का उपदेश किया।

वैवाहिक समाचार

९. वधु चाहिए- आर्य परिवार, संस्कारित, जन्मतिथि-१७.१२.१९९१, कद-५ फुट ६ इंच, शिक्षा- स्नातक, अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनी में कार्यरत प्रतिष्ठित परिवार के युवक हेतु आर्य परिवार की सुशिक्षित एवं संस्कारी युवती चाहिए। सम्पर्क- ९५५०७९६६२०

चुनाव समाचार

१०. आर्यसमाज, ब्यावर, जि. अजमेर का चुनाव सम्पन्न हुआ, जिसमें **प्रधान**- श्री ओमप्रकाश नवाल, **मन्त्री**- श्री भूदेव आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री बृजेश मालू को चुना गया।

११. नगर आर्यसमाज, रकाबगंज, गंगाप्रसाद रोड, लखनऊ के चुनाव में **प्रधान**- श्री अजय श्रीवास्तव, **मन्त्री**- श्री रितेश रस्तोगी, **कोषाध्यक्ष**- श्री संजय श्रीवास्तव को चुना गया।

१२. आर्यसमाज सी-३, जनकपुरी, नई दिल्ली के चुनाव में **प्रधान**- श्री जयपाल गर्ग, **मन्त्री**- श्री रमेशचन्द्र आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री भूपसिंह सैनी को चुना गया।

१३. आर्यसमाज सीताफलमण्डी, सिकन्दराबाद, तेलंगाणा के चुनाव में **प्रधान**- श्री यू. याद गिरी, **मन्त्री**- श्री ए. रंगाराव, **कोषाध्यक्ष**- श्री यू. किशोर बाबू को चुना गया।

१४. आर्यसमाज दयानन्द मार्ग, बिजयनगर, अजमेर का चुनाव दि. ४ अगस्त २०१९ को हुआ, जिसमें **प्रधान**- श्री जगदीश प्रसाद आर्य, **मन्त्री**- श्री ओमप्रकाश आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री कैलाशचन्द्र आर्य को चुना गया।

गुरुकुल ऋषि उद्यान में 'लोकभाषा प्रचार समिति' द्वारा आयोजित 'संस्कृत सम्भाषण शिविर' के समापन की झलकियाँ

आर जे/ए जे/80/2018-2020 तक   प्रेषण : १५-१६ अगस्त २०१९   आर.एन.आई. ३९५९/५९

गुरुकुल ऋषि उद्यान में 'लोकभाषा प्रचार समिति' द्वारा आयोजित 'संस्कृत सम्भाषण शिविर' के समापन की झलकियाँ

प्रेषक:

परोपकारिणी सभ

दयानन्द आश्रम, केसरगंज,

अजमेर (राजस्थान) ३०५००१